KNOWLEDGE IS POWER

सशक्त नारी सशक्त भारत

Ratnank

रत्नांक

महाविद्यालय पत्रिका

अंक : सप्तम्, मार्च 2024

श्री रतनलाल कंवरलाल पाटनी गर्ल्स कॉलेज, किशनगढ़

(P.G. College Affiliated to MDSU Ajmer)

प्रधान संरक्षक : श्री अशोक पाटनी
संरक्षक : श्री सुरेश पाटनी
श्री महावीर कोठारी
CA सुभाष अग्रवाल
परामर्श : डॉ. शैलेन्द्र पाटनी (प्राचार्य)
श्री विश्वजीत जारोली(IQAC)
सम्पादक : डॉ. हुकम सिंह चम्पावत
सह सम्पादक : डॉ. ज्योति शर्मा
टंकण : नेहा शर्मा
मुद्रण एवं वितरण : अमित दाधीच
राजेश जैन

श्री रतनलाल कंवरलाल पाटनी गर्ल्स कॉलेज
अजमेर रोड़, मदनगंज-किशनगढ़, अजमेर (राजस्थान) 305801,
दूरभाष : 01463-257000
ई-मेल : info@rkgirlscollege.edu.in
वेब साइट : www.rkgirlscollege.edu.in

विषय	पृष्ठ
रत्नांक	2
अध्यक्ष संदेश	3
उपाध्यक्ष संदेश	4
सचिव संदेश	5
प्राचार्य संदेश	6
सम्पादकीय	7
अगरबत्ती एक अनमोल भेंट	8
सुर साम्राज्ञी लता मंगेशकर के आखिरी शब्द	9
महिलाओं की अनुसंधानात्मक सोच समाज के लिए...	10
भारत की नारीशक्ति	11
महिला सशक्तिकरण में कंप्यूटर विज्ञान और सूचना...	12
हर मंजिल की ओर प्रगतिशील भारतीय नारी	13
साहित्य और नारी सशक्तिकरण	14
सॉफ्टवेयर डेवलपमेंट इंडस्ट्री में बढ़ता महिलाओं....	15
सोशल मीडिया के चंगुल में आज की युवा पीढ़ी	16
नारी सशक्तिकरण एक प्रयास, महिलाओं को सशक्त....	17
खिलाड़ियों की ज़िंदगी, आशा	18
सशक्त भारत की नींव..., सशक्त नारी, सशक्त भारत	19
नारी सशक्तिकरण विकसित भारत का केन्द्रीय आयाम	20
महिलाओं की समाज के विकास और प्रगति में भूमिका	21
क्लाउडिया गोल्डिन-नोबेल पुरस्कार विजेता	22
खुदा की रहमत-माँ, गणित और नारी, महिला शक्ति....	23
नारी जीवन की विकास....., कविता, मुझे सशक्त.....	24
नारी है पहचान, इस युग की नारी, सशक्त भारत में दृढ़.....	25
छोटी सी चिड़िया, सशक्त नारी सशक्त भारत	26
नारी शक्ति अवार्ड से....., अर्जुन अवार्डी दिव्यकीर्ति...	27
कौशल शिक्षा से सशक्त नारी, सशक्त भारत	28
भारत उत्थान में महिलाओं का योगदान	28
हम भारत की आधी जनसंख्या के निकट	29
एक महिला शून्य से शिखर तक	29
नारी शक्ति, महिला सशक्तिकरण एवं योजनाएं	30
आसमां, आज की नारी	31
Indian Women's Pioneering Contributions....	32
Evolution of Women Characters in....	32-33

एक शिक्षा स्वप्न

शिक्षा से जब कदम बढ़ेंगे, श्रेष्ठ बनेगा देश
बेटी हो या बेटा हो, मेरा यह सन्देश !

विशाल हृदयी, सक्षमता की प्रतिमूर्ति पूज्य 'बाबासा' का शिक्षा से जुड़ा एक ऐसा स्वप्न जिसे वे अन्तर्मन से छूकर कहते थे कि इस शहर के आस-पास की निवासित समस्त बालिकाओं में शिक्षा की अलख जगाने हेतु एक ऐसा महिला शैक्षणिक केन्द्र हो जिसमें वे अपने भविष्य को निखारकर आत्मनिर्भर बन सके। वे महान व्यक्तित्त्व जिन्होंने अपने दीर्घ एवं गहन अनुभव से यह महसूस किया कि यदि घर की एक कन्या पढ़ेगी तो अनेक पीढ़ीयाँ शिक्षित होंगी तथा वे कहीं दबेगी नहीं, हारेगी नहीं, स्वयं को सफल, सक्षम बनाये हुए एक नव समाज की स्थापना करेंगी।

उनके इसी दिव्य स्वप्न को साकार करने का पवित्र कर्त्तव्य उनके परिजनों ने पूर्ण करते हुए किशनगढ़ क्षेत्र को अत्याधुनिक शिक्षा से जुड़ा एक ऐसा शिक्षण संस्थान समर्पित किया जिसे देखते ही लगता है मानो सरस्वती वाणी को ऊर्जस्वित करता ऐसा अद्‌भुत, अनुपम, अद्वितीय शैक्षिक संस्थान पहले नहीं देखा! इन पावन व उच्च विचारों के धनी 'बाबासा' एवं उनके परिवारजनों की शोभा जितने भी शब्दों में की जाए वहाँ शब्दों की अल्पता प्रतीत होने लगती है।

पूज्य 'बाबासा'
को कोटि-कोटि नमन !

''रत्नांक''

'रत्नांक' शब्द दो शब्दों यथा 'रत्न + अंक' शब्द से मिलकर बना है, जिसमें 'रत्न' से आशय धरती से प्राप्त बहुमूल्य खनिज पदार्थों से माना जाता है, जिसका सामान्य अर्थ प्रसिद्ध चमकीले खनिज पदार्थ हीरे, मणि, नगीना या जवाहारात से लिया जाता है। इसका विशिष्ट व महत्वपूर्ण अर्थ 'सर्वश्रेष्ठ' है।

इसमें दूसरा शब्द अंक है जिसका अर्थ संख्या, गोद, चिन्ह् व भाग्य माना जाता है। अतः 'रत्नांक' शब्द से आशय 'रतन के लिए अंक' या 'रतन की गोद में' से लिया जा सकता है। यहाँ 'रत्नांक' शब्द इसलिए महत्त्वपूर्ण है क्योंकि हमारा पूरा समूह परम आदणीय श्री रतनलाल जी एवं उनके आत्मज कंवरलाल जी से ही पल्लवित है। ''रत्नांक'' शब्द में दो वर्णों यथा 'र' व 'क' की अपनी एक विशिष्ट महता प्रतिपादित है। इस शब्द में अग्र वर्ण 'र' पूजनीय श्री रतनलाल जी का स्मरण कराता है तथा शब्द का अन्तिम व पश्च वर्ण 'क' परम आदरणीय श्री कंवरलाल जी को पुष्ट करता है, साथ ही ये वर्ण हमारे महाविद्यालय के नाम को भी चरितार्थ करते हुए प्रतीत होते हैं।

इस शब्द के सामासिक स्वरूप से अर्थ को समझा जाये तो प्रथम अर्थ रतन के लिए अंक एवं द्वितीय अर्थ रतन के अंक में अर्थात् रतन की गोद में से माना जा सकता है। जिसका अर्थ परम पूज्य बाबासाहेब श्री रतनलाल जी को समर्पित प्रकाशित पत्र से है तथा दूसरा अर्थ पूजनीय बाबासाहेब की गोद में पल्लवित व पुष्पित समूह के सम्बन्ध में माना जा सकता है। महाविद्यालयी पत्रिका के सम्बन्ध में हमारा यह प्रयास है कि सप्तम अंक के रूप में प्रकाशित यह महाविद्यालयी पत्रिका ज्ञान की आभा को प्रकाशित करते हुए परमपूज्य बाबासाहेब एवं परम आदरणीय श्री कंवरलाल जी सहित ''सशक्त नारी सशक्त भारत' को समर्पित है। अतः इस पत्रिका का नाम 'रत्नांक' रखना हमारे महाविद्यालय ही नहीं अपितु सम्पूर्ण आर. के. समूह के लिए गौरव की बात है।

संपादक

संदेश

'प्राचीन' काल से हमारे देश भारत में 'यत्र नार्यस्तु पूज्यंते रमंते तत्र देवता' उक्ति चरितार्थ रही है। अर्थात् जहाँ नारियों की पूजा होती है वहाँ देवता निवास करते हैं। इस आधार पर यह स्पष्ट है कि हम प्राचीन समय से ही नारियों को समाज में विशिष्ट स्थान प्रदान कर रहे हैं। इसके मूल में नारी की समृद्धि ही नहीं उनके ज्ञान, ध्यान, अध्यात्म की विशिष्टता है। प्रारंभ से हमारे देश की नारी, शिक्षा, समाज, धर्म, अर्थ, राजनीति आदि क्षेत्रों में पुरूषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर साम्राज्य व राष्ट्र निर्माण में अग्रणी रही है। इसके उदाहरण के रूप में प्राचीन काल की गार्गी, मैत्रेयी, सीता, द्रौपदी व अरूंधती का नाम सर्वोपरि है जिन्होंने राष्ट्र निर्माण हेतु अहम् योगदान प्रस्तुत किया है।

नारियों की समृद्धि नारी सशक्तिकरण की परिकल्पना से ही सार्थक है। मुझे विश्वास है 'सशक्त नारी सशक्त भारत' आधारित 'रत्नांक' पत्रिका का यह विशेष अंक अवश्य ही समाज में नारी की प्रगतिशीलता को प्रतिपादित करेगा। 'रत्नांक' के नव प्रकाशन की मैं सम्पादन, सम्पूर्ण सम्पादक मण्डल को अनंत बधाई व शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ।

इन्हीं मंगलकामनाओं सहित।

अशोक पाटनी
अध्यक्ष
कॉलेज प्रबंधन समिति

संदेश

सशक्तिकरण शब्द में सशक्त करने का भाव परिलक्षित है। हमारे देश भारत में प्रारंभ से लेकर वर्तमान तक नारियों के प्रति विशिष्ट सम्मान रहा है। जब हम ईश्वर की चर्चा करते हैं तो देवता से पूर्व देवी शब्द यथा 'देवी-देवता' लिखा व बोला जाता है। माता-पिता की जब बात आती है तब पिता से पूर्व माता शब्द लिखा जाता है। इससे स्पष्ट है कि नारी सदैव सर्वोपरि व सशक्त रही है। हमारी संस्कृति इसी दृष्टि से सशक्त व प्रमाणित है फिर भी नारी सदैव अग्रणी रहे यह हमारा अनवरत प्रयास है।

'रत्नांक' पत्रिका के इस नव अंक में नारी सशक्तिकरण के विषय को चुना गया है इस हेतु मैं सम्पूर्ण महाविद्यालय परिवार व संपादन मण्डल को बधाई व शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ।

सुरेश पाटनी
उपाध्यक्ष
कॉलेज प्रबंधन समिति

संदेश

'मध्यकाल' हमारे देश में संस्कृति समन्वय का काल था। इस समय हमारे लिए सर्वाधिक चुनौती अपनी संस्कृति को अक्षुण्ण बनाये रखने की थी। पुरूष प्रधान समाज में जहाँ पुरूष अपनी संस्कृति को बचाने के लिए प्राणोत्सर्ग कर रहे थे वहीं हमारे देश की नारियां भी कोई पीछे न थी। राष्ट्र रक्षार्थ पुरूषों के साथ नारियों ने हर क्षेत्र में अर्द्धनारीश्वर के रूप में अपने कर्त्तव्य का निर्वहन किया है जिसमें रानी लक्ष्मी बाई, मीरा बाई, रानी रूद्रमा, रानी चेनम्मा देवी, रानी अहिल्या बाई, रानी पद्मावती आदि का नाम सर्वोपरि है। इन्होंने न केवल सामाजिक जीवन जीया अपितु समाज में अपने मान सम्मान, स्वाभिमान व राष्ट्र रक्षार्थ युद्धों को अपना कंठहार बनाया। इससे यह स्पष्ट है कि संस्कृति संरक्षण व राष्ट्र निर्माण में नारियों का योगदान अतुलनीय रहा है।

'सशक्त नारी सशक्त भारत' परिकल्पना आधारित 'रत्नांक' के इस अंक में नारी समृद्धि व सशक्त स्वरूप की शब्दमयी संरचना हेतु महाविद्यालय परिवार व सम्पूर्ण संपादक मण्डल को कोटिशः बधाई व शुभकामनाएं प्रदान करता हूँ।

सी.ए. सुभाष अग्रवाल
निदेशक एवं सचिव
कॉलेज प्रबंधन समिति

संदेश

'आधुनिक' काल भारतीय नारियों के लिए पुरातन संस्कृति से चल कर नवीनता की ओर बढ़ते कदम हैं। प्राचीन समय में जहाँ नारियाँ ज्ञान के माध्यम से सशक्त रही वहीं मध्यकाल में वीरता के क्षेत्र में अपना परचम फहराया। आज वर्तमान में अपनी नव शिक्षा के साथ कौशल की स्थापना कर रही है। यह समस्त उदाहरण समय के साथ नारियों की सशक्तता का परिणाम है। महाविद्यालय में नारी शिक्षा को प्रबल कर नारियों को सशक्तता प्रदान करने का पुनीत कार्य हमारा महाविद्यालय कर रहा है। आज नारियाँ ज्ञान, विज्ञान, शिक्षा, चिकित्सा, अर्थ, राजनीति में सफलतम कार्य करते हुए स्वयं तो सशक्त बन ही रही हैं साथ ही राष्ट्र को भी सशक्त कर रही हैं। इसका विशिष्ट उदाहरण भारत के राष्ट्रपति पद तक भारतीय नारी का स्थापित होना है।

अनवरत हमारी बेटियों में लेखन की शक्ति को सशक्त व समृद्ध करती 'रत्नांक' पत्रिका है। 'सशक्त नारी सशक्त भारत' के विचारों से युक्त 'रत्नांक' के सप्तम् अंक की मैं सम्पादक मण्डल एवं सम्पूर्ण महाविद्यालय परिवार को बहुत-बहुत बधाई, शुभकामनाएं देता हूँ।

डॉ. शैलेन्द्र पाटनी
प्राचार्य

सम्पादकीय

वैदिक काल से पुरूष प्रधान समाज में नारियों का विशिष्ट स्थान रहा है। हमने हमारी सभ्यता व संस्कृति में नारी को सदैव पुरुष के संबल के रूप या शक्ति के रूप में प्रतिपुष्टित होते देखा है। यदि इस विषय पर गंभीरता से विचार करें तो इस सृष्टि का निर्माण ब्रह्मा जी ने किया परंतु इस मूक सृष्टि में नाद, सौंदर्य, आवाज या ध्वनि देने का जो कार्य किया है वह माता सरस्वती ने किया। इस संसार में संपूर्ण मनुष्य में ज्ञान की ज्योति प्रज्वलित माता सरस्वती ने की है। शिव की आराधना में भले ही भोलापन रहा हो परंतु शक्ति का चमत्कार तो माता पार्वती से प्राप्त होता है। भगवान विष्णु ने सागर में अपना केंद्र बनाया है तो मानव जीवन का धन-धान्य से संचालन लक्ष्मी ने ही व्यवस्थित किया है। भगवान राम के लिए चौदह वर्ष का वनवास एक निश्चित मंजिल तक लाने का कार्य माता सीता के संघर्षों से ही पूर्ण हुआ है। कृष्ण भले ही बांसुरी बजाकर सबका मन मोह लेते थे परंतु राधा का स्मरण कृष्ण से पहले ही किया जाता है। तत्पश्चात् गुरुकुल प्रणाली में प्रत्येक गुरु की ज्ञान साधना में गुरु माता का विशिष्ट स्थान रहा है।

नारी स्वयं एक शक्ति है यह मध्यकाल की युद्ध विभीषिका में उनके त्याग व बलिदान की घटनाएं सत्य साक्षात्कार कराती है। मीरा का अपने आराध्य के प्रति समर्पण, हाड़ी रानी का जीवन त्याग, पन्ना का अपने पुत्र चंदन का मेवाड़ के प्रति बलिदान, स्वाभिमान की रक्षार्थ रानी पद्मावती सहित सोलह हजार रानियों का धधकती आग में जौहर, रानी लक्ष्मी बाई का युद्ध मैदान में दुश्मन अंग्रेजों तक को परास्त करना साथ ही कुशल प्रशासन को संभालना। यह समस्त उदाहरण हमें नारियों के प्रति नतमस्तक करते हैं।

वर्तमान के इस आधुनिक युग की नव संरचना में धरती के गर्भ से आकाश, चंद्रमा, सूर्य तक की शोध यात्रा में नारी एक सशक्त हस्ताक्षर व उदाहरण है। शिक्षा, ज्ञान, ध्यान व अध्यात्म का अनूठा संयोजन वर्तमान नारी की विशिष्टता है। आज अंतरिक्ष में नारी अपनी वैज्ञानिक शक्ति से, धरती पर मातृत्व से लेकर पारिवारिक संरचना तक एवं राजनीति में प्रमुखता से कर्त्तव्य निर्वहन करते हुए राष्ट्र हेतु सदैव तत्पर है। हम नारियों की इस कर्त्तव्यशीलता व प्रगतिशीलता को विस्मरण नहीं कर सकते हैं।

डॉ. हुकम सिंह चम्पावत
विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग

अगरबत्ती- एक अनमोल भेंट

विवाह के बाद पहली बार मायके आयी बेटी का स्वागत सप्ताह भर चला। सप्ताह भर बेटी को जो पसन्द है, वो सब किया गया। वापस ससुराल जाते समय पिता ने बेटी को एक अति सुगंधित अगरबत्ती का पैकेट दिया और कहा कि पुत्री तुम जब ससुराल में पूजा करोगी तब यह अगरबत्ती जरूर जलाना....।

माँ ने मन्द स्वर में कहा - बिटिया प्रथम बार मायके से ससुराल जा रही है तो भला कोई अगरबत्ती जैसी चीज देता है? पिता ने झट से जेब में हाथ डाला और जेब में जितने भी रूपये थे वो सब बेटी को दे दिए। ससुराल में पहुँचते ही सासु माँ ने बहु का बैग टटोला और पूछा कि तुम्हारे माँ बाप ने विदाई में क्या दिया, कुछ विशेष न मिलने पर उनकी नजर अगरबत्ती पैकेट पर पड़ी। क्रोधवश सासु माँ ने मुँह बनाकर बहु को बोला कि कल पूजा में यह अगरबत्ती पैकेट लगा लेना.....।

सुबह जब बेटी पूजा करने बैठी, अगरबत्ती का पैकेट खोला तो उसमें से एक चिट्ठी निकली - लिखा था....। बेटी यह अगरबत्ती स्वतः जलती है, मगर संपूर्ण घर को सुगंधित कर देती है। इतना ही नहीं, आजू-बाजू के पूरे वातावरण को भी अपनी महक से सुगंधित एवं प्रफुल्लित कर देती है...!

हो सकता है कि तुम कभी पति से कुछ समय के लिए रूठ जाओगी या कभी अपने सास-ससुरजी से नाराज हो जाओगी, कभी देवर या ननद से भी रूठोगी, कभी तुम्हे किसी से बाते सुननी भी पड़ जाए या फिर कभी पास-पड़ोसियों के बर्ताव पर तुम्हारा दिल खट्टा हो जाये, तब तुम मेरी यह भेंट ध्यान में रखना।

अगरबत्ती की तरह जलना, जैसे अगरबत्ती स्वयं जलते हुए पूरे घर और संपूर्ण परिसर को सुगंधित और प्रफुल्लित कर ऊर्जा से भरती है, ठीक उसी तरह तुम स्वतः सहन करते हुए ससुराल को अपना मायका समझ कर सब को अपने व्यवहार और कर्म से सुगंधित और प्रफुल्लित करना.....।

बेटी चिट्ठी पढ़कर फफक-फफक कर रोने लगी, सासु माँ दौड़कर आयी, पति और ससुरजी भी पूजा घर में पहुँचे जहाँ बहु रो रही थी।

''अरे हाथ को चटका लग गया क्या? - पति ने पूछा

''क्या हुआ यह तो बताओ - ससुरजी बोले।

सासु माँ आजू-बाजू के सामान में कुछ है क्या-यह देखने लगी, तो उन्हें पिता द्वारा सुंदर अक्षरों में लिखी हुई चिट्ठी नजर आयी, चिट्ठी पढ़ते ही उन्होंने बहु को गले से लगा लिया और चिट्ठी ससुरजी के हाथों में दी। चश्मा ना पहने होने की वजह से चिट्ठी बेटे को देकर पढ़ने के लिए कहा ....। सारी बात समझते ही संपूर्ण घर स्तब्ध हो गया।

सासु माँ उच्च स्वर में बोली अरे यह चिट्ठी फ्रेम करानी है, यह मेरी बहु को मिली हुई सबसे अनमोल भेंट है, पूजा घर के बाजू में ही इसकी फ्रेम होनी चाहिए। फिर सदैव वह फ्रेम अपने शब्दों से सम्पूर्ण घर और अगल-बगल के वातावरण को अपने अर्थ से महकाती रही, अन्ततः अगरबत्ती का पैकेट खत्म होने के बावजूद भी.... क्या आप भी ऐसे संस्कार अपनी बेटी को देना चाहेंगे। बेटियाँ दो कुलों को महकाती।

सी.ए. सुभाष अग्रवाल
निदेशक एवं सचिव

सुर साम्राज्ञी लता मंगेशकर के आखिरी शब्द

इस दुनिया में मौत से बढ़कर कुछ भी सच नहीं है। दुनिया की सबसे महंगी ब्रांडेड कार मेरे गेराज में खड़ी है लेकिन मुझे व्हीलचेयर पर बिठा दिया गया। मेरे पास इस दुनिया में हर तरह के डिजाईन और रंग है। महंगे कपड़े, महंगे जूते, महंगे सामान लेकिन मैं उस छोटे से गाउन में हूँ जो अस्पताल ने मुझे दिया था। मेरे बैंक खाते में बहुत पैसे हैं लेकिन यह मेरे लिए किसी काम के नहीं, मेरा घर मेरे लिए महल जैसा है लेकिन मैं अस्पताल में एक छोटे से बिस्तर पर लेटी हूँ। मैं दुनिया के 5 सितारा होटल में घूमती रही लेकिन अब मुझे अस्पताल में एक प्रयोगशाला से दूसरी प्रयोगशाला में भेजा जा रहा है।

एक समय था जब हर दिन साथ हेयर स्टाइलिस्ट मेरे बालों की सफाई करते थे लेकिन आज मेरे सिर पर बाल नहीं है। मैं दुनिया भर के विभिन्न फाइव स्टार होटल में खाना खाती थी पर आज तो दिन में दो गोली और रात को एक बूंद नमक ही मेरा आहार है। मैं विभिन्न विमानों से दुनिया भर में यात्रा कर रही थी लेकिन आज दो लोग अस्पताल के बरामदे में आने-जाने में मेरी मदद कर रहे हैं। किसी भी सुविधा ने मेरी मदद नहीं की। किसी तरह आराम नहीं लेकिन कुछ अपनों के चेहरे उनकी दुआओं ने मुझे इन दिनों ज़िंदा रखा हैं।

यह जीवन है। आपके पास कितनी भी दौलत क्यों ना हो आप खाली हाथ ही निकलेंगे दयालु बनो उनकी मदद करो जो कर सकते हो पैसे और पावर वाले लोगों को अहमियत देने से बचें अपने लोगों से प्यार करो। भले ही आपके लिए कोई भला बुरा कहे पर आप उनकी सराहना करो कि वह आपके लिए क्या है। उनका सपोर्ट करो उनके दुख दर्द में शामिल हो।

जयश्री अग्रवाल
सदस्य, प्रबंध समिति

महिलाओं की अनुसंधानात्मक सोच समाज के लिए नई दिशाएँ

महिलाओं का योगदान जीव विज्ञान में बड़ा महत्त्वपूर्ण रहा है। उनकी वैज्ञानिक सोच और अनुसंधान के दृष्टिकोण से जीव विज्ञान के कई क्षेत्रों में नई दिशाएँ मिली हैं और विशेषकर उन्होंने उन विषयों पर ध्यान केंद्रित किया है जिन्हें पहले अनदेखा किया गया था। जीव विज्ञान में महिलाओं का योगदान न केवल वैज्ञानिक अद्यतन को बढ़ावा देने में महत्त्वपूर्ण रहा है, बल्कि उन्होंने समाज में सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तनों को भी प्रेरित किया है। महिला वैज्ञानिकों ने अपनी विद्या और प्रतिभा के माध्यम से समाज में स्थान पाने के लिए प्रेरित किया है, जिससे महिलाओं का दर्जा और स्थान समाज में सुधारता जा रहा है। इन्हीं महिला वैज्ञानिकों के योगदान से जीव विज्ञान में एक नया संचार उत्पन्न हुआ है, जिसमें विशेष रूप से महिलाओं के द्वारा चिह्नित किए गए विषयों और प्रश्नों पर ध्यान केंद्रित हुआ है। इससे न केवल वैज्ञानिक अनुसंधान में विविधता बढ़ी है, बल्कि समाज में भी महिलाओं के प्रति सम्मान और उनके सामाजिक स्थान की मान्यता मिली है।

महिलाओं ने जीव विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में अपनी पहचान बनाई है, जैसे जीनेटिक्स, न्यूरोसाइंस, जीव रसायन विज्ञान, एकोलॉजी, इम्यूनोलॉजी, आदि। जीव विज्ञान में महिलाओं की पहचान के कई उदाहरण हैं। जैसे रीता लेवी-मोंटालसीनी, जिन्होंने तंत्रिका वृद्धि कारक (NGF) की खोज की, जिससे उन्हें नोबेल पुरस्कार मिला ।

एक उदाहरण रॉसलिंड फ्रैंकलिन है, जिन्होंने डीएनए के स्तर पर तस्वीर खींचने के लिए एक्स-रे क्रिस्टलोग्राफी का उपयोग किया। उनका काम डीएनए के ढाल को समझने में महत्त्वपूर्ण था और उन्होंने क्रिस्टलोग्राफी की मदद से डीएनए के तीन-आयामी ढ़ाल की पहली तस्वीर बनाई। इस योगदान ने डीएनए की संरचना को समझने में महत्त्वपूर्ण योगदान किया। मैरी क्लीन, जिन्होंने समुद्री जीवों के अध्ययन में अपना कार्य किया। उन्होंने विभिन्न समुद्री जीवों की संरचना और उनके जीवन प्रक्रियाओं की अध्ययन किया, जिससे हमें महत्त्वपूर्ण जानकारी प्राप्त हुई है और समुद्री जीवों के संरक्षण में मदद मिली है।

दूसरे उदाहरण के रूप में, डॉ. शोभना गर्ग, जो एक प्रसिद्ध जैव-रसायनिक वैज्ञानिक हैं, नवाचार और अनुसंधान के क्षेत्र में उनके महत्त्वपूर्ण योगदान के लिए प्रसिद्ध हैं। उनके अनुसंधान विज्ञान में नए द्रव्यों के विकास, जैविक उत्पादों के निर्माण, और वायरल इन्फेक्शन के विरुद्ध लड़ाई में मददगार साबित हुए हैं।

एक नवीनतम उदाहरण है डॉ. सुमित्रा महाजन, जिन्होंने अपने अद्‌भुत योगदान के लिए वैश्विक स्तर पर पहचान प्राप्त की हैं। उनका काम नैनो-बायोलॉजिकल उत्पादों के विकास में महत्त्वपूर्ण है, जिसने विभिन्न क्षेत्रों में उपयोग के लिए नई संभावनाओं को खोला है।

असिमा चटर्जी एक प्रमुख भारतीय जड़ी बूटी रसायनिक वैज्ञानिक थीं। उन्होंने जड़ी बूटियों के आधार पर उपयोगी औषधियों के विकास में अपने योगदान के लिए विख्यात हुई। उनका काम कैंसर, मलेरिया, और लेप्रोसी जैसी बीमारियों के इलाज में महत्त्वपूर्ण रहा है। उन्होंने कई जड़ी बूटियों से उत्पन्न औषधियों का अनुसंधान किया और इस प्रकार आयुर्वेदिक चिकित्सा को आधुनिक विज्ञान के साथ मिलाकर बढ़ावा दिया। उन्हें 1975 में पद्म भूषण से सम्मानित किया गया था। उदाहरण बहुत से हैं, लेकिन सभी का वर्णन यहाँ नहीं किया जा सकता। इस प्रकार, महिलाओं का योगदान जीव विज्ञान में अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है। उनके कार्य और उनकी उपलब्धियाँ हमें यह दिखाती हैं कि महिलाएं विज्ञान के क्षेत्र में समर्थ हैं और उनका योगदान विज्ञान की प्रगति में अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है।

विश्वजीत जारोली
विभागाध्यक्ष, प्राणी-विज्ञान विभाग

भारत की नारीशक्ति

भारतीय साहित्य महिला शक्ति से सुसज्जित है, किन्तु वर्तमान मे "यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः" पर पुनर्विचार की आवश्यकता प्रतीत होने लगी है। संविधान की व्यवस्थाओं पर भी विचार विमर्श हो रहा है।

भारतीय नारी समाज के प्रत्येक क्षेत्र में ही नहीं, वरन् सेना एवं अर्द्ध सैनिक बलों, समान्य पुलिस सेवामें भी अपना वर्चस्व कायम कर रही है। शिक्षा, चिकित्सा, रेल परिवहन, सिविल सेवा में तो परचम लहरा ही रही हैं। वर्तमान में व्यापार, उद्योग एवं कारपोरेट सेक्टर में भी महिला सशक्तिकरण पर्याप्त रूप से दृष्टिगोचर हो रहा है। किरण शॉ मजूमदार, इन्दिरा नुई, सुधामूर्ति का नाम विश्वस्तर पर लिया जाता है। भारतीय महिला के सशक्तिकरण का इनसे अच्छा उदाहरण क्या हो सकता है। खेल जगत में भी भारतीय महिलाओं की भागीदारी उल्लेखनीय रही है। शहरी नहीं वरन् ग्रामीण क्षेत्रों में भी महिलायें अपनी साझेदारी बखूबी निभा रही है। यद्यपि जो सहयोग सामाजिक आधार पर मिलना चाहिये उसकी कमी अभी भी महसूस की जाती है। समाज एवं सरकार से यह आशा की जाती है कि महिलाओं की भागीदारी को उचित प्रतिनिधित्व देना चाहिये। यह सत्य है कि भागीदारी बढ़ रही है किन्तु पश्चिमी लोकतंत्रीय व्यवस्था की तुलना में अभी भारत पिछड़ रहा है। वर्तमान भागीदार अभी भी 30-35 प्रतिशत है जो जनसंख्या के अनुपात में कम आंकी जाती है। महिलाओं के आगे आने से परिवार समाज एवं राष्ट्र मजबूती से आगे बढ़ सकता है। विकसित भारत की परिकल्पना तभी साकार होगी जब देश की आधी जनसंख्या कदम से कदम मिला कर आगे बढ़ेगी।

जब महिला शक्ति सशक्त होगी तभी वह अपना निर्णय स्वयं ले सकेगी। इतिहास में झांके तो स्वतंत्रता के परवर्ती काल में महिला भेदभाव व उत्पीड़न उजागर था, यह स्थिति बदली तो है, परन्तु अभी भी ''निर्भया'' कांड होते रहते हैं। महिला धीरे-धीरे अपनी शक्ति को जान गई हैं, तथा आवश्यकता पड़ने पर अपनी अवाज उठाने लगी हैं। उस सक्षम नारी का उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों में भी महिलाओं का अपने अधिकारों के प्रति जागरूक करना ही है। दुर्व्यवहार के प्रकरणों में आगे आना और अपनी बात को मजबूती से रखना अब आरंभ हो चुका है। सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक रूप से भी भारतीय नारी सशक्त हो रही है और अब ये बैसाखी के सहारे नहीं चलना चाहती। वायुयान पायलेट, फाइटर पायलेट, वैज्ञानिक, वन्दे भारत की चालक, जहां भी नजर जाती है,एक सशक्त महिला, जो मां भी है और पत्नी भी, अपनी भूमिका सफलता पूर्वक निभा रही है।

राष्ट्र के निर्माण में आर्थिक व सामाजिक विकास की महती भूमिका होती है। वर्तमान में प्रधानमंत्री ने मुद्रा योजना 2015 के अन्तर्गत महिला व्यवसायी को एक लाख करोड़ तक का उदार ऋण दिया था जिससे 75 प्रतिशत महिलाओं को सीधा लाभ मिला था। स्टार्ट अप में भी महिलाओं को प्राथमिकता दी गई तथा व्यापार विस्तार करने में भी सहायता प्रदान गई है।

महिलाओं को आर्थिक आधार देने की दृष्टि से अमृत भारत योजना के अन्तर्गत 2016 से स्टेन्ड अप इन्डिया की शुरुआत की गई । जन धन योजना में (लगभग 20 करोड़ महिलाओं के स्वयं सहायता समूहों से सीधे सम्बद्ध किया गया। स्किल इन्डिया के तत्वाधान में 50 प्रतिशत से अधिक महिला शक्ति की भागीदारी सुनिश्चित की गई। महिला शिक्षा पर भी अधिक ध्यान दिया जाकर न केवल उन्हें सशक्त किया गया अपितु पूरे परिवार को इस कदम से आर्थिक सुरक्षा प्रदान की गई। आज ग्रामीण क्षेत्र की महिलायें भी अपनी साथिनों को रोजगार उपलब्ध करवा रही है।

डॉ. रूचि मिश्रा
विभागाध्यक्ष, राजनैतिक विज्ञान विभाग

महिला सशक्तिकरण में कंप्यूटर विज्ञान और सूचना प्रौद्योगिकी में प्रगति का योगदान

आज की तेजी से विकसित हो रही दुनिया में, कंप्यूटर विज्ञान और सूचना प्रौद्योगिकी समाज के विभिन्न पहलुओं को आकार देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। इस परिवर्तन के बीच, इन क्षेत्रों के माध्यम से महिला सशक्तिकरण के कई मार्ग खुले है। जैसे-जैसे हम डिजिटल युग में गहराई से उतरते हैं, महिलाओं का सशक्तिकरण केवल लैंगिक समानता का मामला नहीं है, बल्कि नवाचार, आर्थिक विकास और सामाजिक प्रगति को आगे बढ़ाने में एक महत्त्वपूर्ण कारक भी है। आज देश में कंप्यूटर विज्ञान और सूचना प्रौद्योगिकी में प्रगति महिला सशक्तीकरण को बढ़ावा दे रही है, विशेष रूप से भारत पर ध्यान केंद्रित करते हुए, जहां प्रौद्योगिकी और लैंगिक समानता के एकीकरण से गहन सामाजिक परिवर्तन हो सकते हैं।

ऐतिहासिक रूप से, तकनीकी उद्योग में पुरुषों का वर्चस्व रहा है, जिसके परिणामस्वरूप एक स्पष्ट लिंग अंतर है। हालाँकि, समावेशिता और विविधता की दिशा में ठोस प्रयासों से धीरे-धीरे लेकिन महत्त्वपूर्ण बदलाव आया है। लड़कियों को एसटीईएम (विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग और गणित) शिक्षा के लिए प्रोत्साहित करने की पहल ने जोर पकड़ लिया है। सरकारी और गैर-सरकारी दोनों संगठन, तकनीकी क्षेत्रों में रुचि रखने वाली युवा लड़कियों के लिए छात्रवृत्ति, परामर्श कार्यक्रम और कार्यशालाएँ प्रदान करने में सहायक रहे हैं।

भारत में ऐसी ही एक उल्लेखनीय पहल "गर्ल्स हू कोड" कार्यक्रम है, जिसका उद्देश्य वंचित समुदायों की लड़कियों को मुफ्त कोडिंग कक्षाएं प्रदान करके प्रौद्योगिकी में लिंग अंतर को पाटना है। उन्हें कोडिंग कौशल से लैस करके, यह कार्यक्रम न केवल उनके करियर की संभावनाओं को बढ़ाता है बल्कि आत्मविश्वास भी पैदा करता है और सशक्तिकरण की भावना को बढ़ावा देता है।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) और मशीन लर्निंग (एमएल) स्वास्थ्य सेवा से लेकर वित्त तक विभिन्न क्षेत्रों में क्रांति ला रहे हैं। भारत में, एआई-संचालित पहल महिलाओं को सशक्त बनाने के साथ-साथ सामाजिक चुनौतियों से निपटने में महत्त्वपूर्ण प्रगति कर रही है। एक अनुकरणीय मामला एआई-संचालित स्वास्थ्य देखभाल समाधानों का विकास है जो मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य को पूरा करता है। उदाहरण के लिए, ग्रामीण भारत में एआई-आधारित स्वास्थ्य सेवा पहल, प्रोजेक्ट जिज्ञासा, गर्भावस्था में महिला को उपयोगी जानकारी प्रदान करने के लिए मशीन लर्निंग एल्गोरिदम का उपयोग करती है। दूरदराज के इलाकों की महिलाएं, जिनके पास पहले गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य देखभाल तक पहुंच नहीं थी, अब इन तकनीकी प्रगति के कारण शीघ्र जांच और व्यक्तिगत देखभाल से लाभान्वित हो रही हैं। इसके अलावा, SHEROES जैसे AI-संचालित प्लेटफॉर्म महिलाओं को कौशल विकास, परामर्श और उद्यमिता के अवसर प्रदान करके सशक्त बना रहे हैं। व्यक्तिगत करियर मार्गदर्शन और नेटवर्किंग अवसरों के माध्यम से, महिलाएं डिजिटल अर्थव्यवस्था में आगे बढ़ने के लिए उपकरणों से लैस हैं।

कंप्यूटर विज्ञान और सूचना प्रौद्योगिकी में प्रगति के माध्यम से महिलाओं को सशक्त बनाने में हुई प्रगति के बावजूद, कई चुनौतियाँ अभी भी बनी हुई हैं। लैंगिक पूर्वाग्रह, संसाधनों तक पहुंच की कमी और सांस्कृतिक बाधाएं तकनीकी क्षेत्रों में महिलाओं की भागीदारी में बाधा बनी हुई हैं। इन चुनौतियों से निपटने के लिए विभिन्न स्तरों पर ठोस प्रयासों की आवश्यकता है। शैक्षणिक संस्थानों को समावेशिता की संस्कृति को बढ़ावा देने और समान अवसर प्रदान करने की आवश्यकता है।

रवि सोनी
विभागाध्यक्ष, कंप्यूटर विज्ञान विभाग

हर मंज़िल की ओर प्रगतिशील भारतीय नारी

आज जब भारत की प्रगतिशीलता की बात की जाती है तो भारतीय नारी शक्ति की चर्चा न हो ऐसा हो नहीं सकता। प्राचीन समय से अब तक भारतीय नारी ने पुरूष की शक्ति को संबल प्रदान किया है। प्राचीन समय का ज्ञान हो, मध्यकाल का युद्ध हो या वर्तमान का यंत्र युग सबमें भारतीय नारी सशक्त रही है। आज हमारे देश की राजनीति में महिला सर्वोच्च पद पर है वहीं आसमान का सीना चीर उड़ान भरने वाली महिला पायलट भी सिद्ध कर चुकी है कि नारी केवल अपनी शक्ति का प्रदर्शन धरती पर ही नहीं आमान में भी कर सकती है। सेना के अनेक पदों पर चाहे जल, थल या वायु हो सबमें अपनी भागीदारी निश्चित कर राष्ट्र को मजबूत बनाने का कार्य र रही हैं। आपने हाल ही में चंद्रयान की सकल लैंडिंग में नारी की कर्मठता, कर्मशीलता व एकाग्रता को महसूस किया होगा कि इसरो ने चंद्रयान की योजना में नारियों को केवल भागीदारी का ही नहीं सकल लैंडिंग का सफल सहयोग व संबल माना है।

भारत की राजनीति में भी अब देश की सर्वोच्च पंचायत लोकसभा में नारी का प्रतिशत बढ़ने की ओर अग्रसर है। इन सभी तथ्यों व विषय से स्पष्ट है कि नारी स्वयं सशक्तता की ओर बढ़ रही है साथ ही हमारे देश को सशक्त बनाने का अथक प्रयास कर रही है। इसी संकल्पना से हमारा राष्ट्र पुनः विश्व गुरू बनेगा हमें पूर्ण विश्वास है। नारी शक्ति में माँ, बहिन, पत्नी, बेटी सभी रूप प्रेरणामय समाहित है।

अमित दाधीच
प्रशासनिक अधिकारी

साहित्य और नारी सशक्तिकरण

आज के समय में जहां तक दिख गया है कि भारत में महिलाओं की स्थिति में पिछले कुछ सदियों में कई बड़े बदलाव का सामना किया है महिलाओं ने प्राचीन काल में पुरुषों के साथ बराबरी के स्तरीय जीवन और सुधार को द्वारा समान अधिकारों को बढ़ावा दिए जाने तक भारत में महिलाओं का इतिहास काफी गतिशील रहा।

नई साहित्य लेखन एक और स्वातः सुखाय है तो दूसरी और जनहिताय हैं नई साहित्य इस परिवर्तन युग का शुभचिंतक है। महिला लेखन आज स्पर्धा के युग में चुनौती है। फिर भी उसे हर स्थिति का सामना करने में उसे किसी बैसाखी की जरूरत नहीं। अभी तो वह स्वयं मार्ग ढूंढ स्वयं अपने हस्ताक्षर बना रही है। संयत व शालीन बनी रहकर सृजन करना भी एक चुनौती है। महिला रचनाकार ऐसा करती आ रही है। निर्भयता पूर्वक सूचना और लिखना होगा आज की यह जरूरत है।

नई अपने ढंग से प्रतिष्ठित होने के लिए संघर्षशील रही है इसलिए विरोध अवरोध तिरस्कार बहिष्कार को ना करते हुए उसे आगे आना होगा। तभी समाज और राष्ट्र के पति अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह कर सकती है और अपने सार्थकता को सिद्ध भी। हमें ठोस चिंतन का प्रमाण देना है व इस डब से बचना होगा कि चूंकि स्त्री है अतः स्त्री समस्याओं या भावनाओं को वही बेहतर समझ सकती है। वह सजल के क्षेत्र में पैर रख रही है ना कि किसी रण क्षेत्र में। नारी मुक्ति का संघर्ष लंबा है और इस मुख्यतः स्वयं नारी को लड़ना है। लेकिन यह लड़ाई पुरुष वर्ग के विरुद्ध ना होकर व्यवस्था के अंतर्विरोधों व पुरुष प्रधान समाज से निकले नारी विरोधी अवमूल्यों के प्रति होनी चाहिए। समाज में अपनी संस्कृति से जुड़ी वर्तमान परिवेश की चुनौतियां स्वीकार करके ही महिला सृजन सफल हो रहा है और होगा। समसामयिक कला में नई क्षमता की एक नई चेतना भारतीय समाज में व्याप्त हुई है। बहुत प्रसन्नता की बात है की स्त्री लेखन की चर्चा अब हर जगह होने लगी है यह निश्चय ही महिला रचनाकारों के बढ़ते महत्व को रेखांकित करता है।

अतः यह कहा जा सकता है कि नारी आदिकाल से ही पीड़ित एवं शोषण रही है। पुरुष प्रधान समाज ने मान मर्यादा की आड़ में सदा उसे दबा कर रखना चाहा कभी घर की इज्जत का कहकर तो कभी देवी कहकर चार दीवारों के अंदर कैद ही रखा इन्हीं परंपरागत पितृसत्तात्मक वीडियो को लगने की लड़ाई है। नारी सशक्तिकरण आज के दौर में भारतीय संस्कृति में नारी को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया गया है वह शिव भी है और शक्ति भी वह सभी कार्य कर सकती है जो एक पुरुष करता है वह एक पुरुष के समान उससे अधिक कार्य कर सकती है और करती भी है।

डॉ. ज्योति शर्मा
सहायक आचार्य, हिंदी शिक्षा विभाग

सॉफ्टवेर डेवलपमेंट इंडस्ट्री में बढ़ता महिलाओं का वर्चस्व

हाल ही के वर्षों में, भारत में सॉफ्टवेयर डेवलपमेंट उद्योग में लैंगिक समावेशिता की दिशा में एक आशाजनक रुझान देखा गया है। यह बदलाव सिर्फ विविधता के बारे में नहीं है बल्कि उत्पादकता बढ़ाने के लिए व्यापक प्रतिभा पूल का लाभ उठाने के बारे में भी है। विगत कुछ वर्षों से सॉफ्टवेर इंडस्ट्री में भर्ती के रुझानों को देखें तो हम पाएंगे की सॉफ्टवेर डेवलपमेंट कम्पनीज महिला उम्मीदवारों को लेना पसंद कर रहे हैं और उनके कौशल का उपयोग कर रहे हैं।

भारत का सॉफ्टवेयर उद्योग तेजी से बढ़ रहा है, 2024 तक वैश्विक स्तर पर डेवलपर्स के लिए सबसे बड़ा आधार बनने की उम्मीद है। इस विकास के साथ कुशल पेशेवरों की बढ़ती मांग आती है। कंपनियां न केवल तकनीकी दक्षता की तलाश कर रही हैं बल्कि विविधता और समावेशिता को भी प्राथमिकता दे रही हैं। सॉफ्टवेयर भूमिकाओं के लिए महिला आवेदकों में लगातार वृद्धि देखी गई है, जो भर्ती पैटर्न में बदलाव का संकेत है।

सॉफ्टवेर कम्पनीज के रिक्रूटमेंट पैटर्न को यदि समझने की कोशिस करें तो देखेंगे की वे महिलाओं को नियुक्त करने की ओर झुक रही हैं? कारण

- विविध परिप्रेक्ष्य : महिलाएं समस्या-समाधान, टीमों के भीतर नवाचार और रचनात्मकता को बढ़ावा देने के लिए अद्वितीय दृष्टिकोण लाती हैं।
- सॉफ्ट स्किल्स : महिलाएं संचार, सहयोग और सहानुभूति में उत्कृष्टता प्राप्त करने का प्रयास करती हैं, टीम की गतिशीलता और परियोजना परिणामों को बढ़ाती हैं।
- कार्य-जीवन संतुलन : कोविड के बाद वर्क फ्रॉम होम मोड काफी प्रचलित हो गया है, और अध्ययनों से पता चला है कि पुरुषों की अपेक्षा महिलाएं ऐसे वातावरण में बेहतर अनुकूलन करती हैं, जिससे उत्पादकता और दक्षता में वृद्धि होती है।
- नेतृत्व क्षमता : महिलाएं मजबूत नेतृत्व और परियोजना प्रबंधन कौशल का प्रदर्शन करती हैं, नवाचार को बढ़ावा देती हैं और समावेशी कार्य संस्कृतियों को बढ़ावा देती हैं।

तकनीकी ज्ञान और प्रबंधन कौशल का प्रभाव :

- तकनीकी दक्षता : महिला उम्मीदवारों के पास अच्छा तकनीकी ज्ञान है, जो कंप्यूटर विज्ञान और संबंधित क्षेत्रों में शिक्षा और प्रशिक्षण के माध्यम से प्राप्त किया गया है।
- प्रबंधन कौशल : वे मजबूत नेतृत्व और परियोजना प्रबंधन कौशल का प्रदर्शन करते हैं, जो सफल परियोजना निष्पादन और टीम एकजुटता में योगदान करते हैं।
- अनुकूलनशीलता और लचीलापन : महिलाएं परिवर्तन को प्रभावी ढंग से अपनाती हैं, नई प्रौद्योगिकियों को अपनाती हैं और सहयोगात्मक कार्य वातावरण को बढ़ावा देती हैं।
- सहयोगात्मक दृष्टिकोण : वे विचारों की विविधता को प्रोत्साहित करते हैं, टीम की एकजुटता को बढ़ाते हैं और अंततः बेहतर परियोजना परिणामों की ओर ले जाते हैं।

अध्ययनों से पता चलता है कि वर्क फ्रॉम होम सेटिंग में महिलाओं ने उच्च उत्पादकता और दक्षता का प्रदर्शन किया है, जिसका कारण आवागमन का तनाव कम होना और बेहतर कार्य-जीवन संतुलन है। यह लचीलापन भौगोलिक बाधाओं और देखभाल संबंधी जिम्मेदारियों जैसी बाधाओं को भी दूर करता है, जिससे कंपनियों को विविध प्रतिभा पूल में प्रवेश करने में मदद मिलती है।

महिलाओं के अमूल्य योगदान को मान्यता मिलने से सॉफ्टवेयर विकास उद्योग परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है। विविधता और समावेशिता को प्राथमिकता देकर, कंपनियां पुरुषों और महिलाओं दोनों की सामूहिक प्रतिभा और क्षमता का लाभ उठा रही हैं। यह समावेशी दृष्टिकोण न केवल उत्पादकता बढ़ाता है बल्कि नवाचार को भी बढ़ावा देता है और टीम की गतिशीलता को मजबूत करता है। जैसा कि हम अधिक न्यायसंगत कार्यबल की दिशा में प्रयास कर रहे हैं, सॉफ्टवेयर विकास में महिलाओं को सशक्त बनाना न केवल लैंगिक समानता का मामला है, बल्कि उद्योग की निरंतर सफलता के लिए एक रणनीतिक अनिवार्यता भी है।

श्वेता शर्मा
सहायक आचार्य, कंप्यूटर विज्ञान विभाग

सोशल मीडिया के चंगुल में आज की युवा पीढ़ी

सोशल मीडिया ने हमारे संचार के तरीके को बदल दिया है, खासकर कॉलेज के विद्यार्थियों के लिए। इसके बारे में सोचें: फेसबुक 2004 में सामने आया, फिर 2007 में स्मार्टफोन आए, जिससे इंटरनेट कभी भी और कहीं भी उपलब्ध हो गया। धीमे इंटरनेट के दिन याद हैं? हाँ, वे दिन बहुत चले गये। आजकल की युवा पीढ़ी सोशल मीडिया के साथ आगे बढ़ने को आदर्श मानती है लेकिन यह डिजिटल क्रांति उनके मानसिक स्वास्थ्य को कैसे प्रभावित करती हैं? आइए अच्छे और गैर-अच्छे दोनों पक्षों पर एक नज़र डालें। कॉलेज के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य के लिए सोशल मीडिया के बारे में अच्छी बातें।

कनेक्टिविटी : सोशल मीडिया विद्यार्थियों को परिवार, दोस्तों और सहपाठियों के साथ कनेक्ट रहने में मदद करता है, खासकर जब वे घर से दूर होते हैं। सोशल मीडिया के द्वारा वे परिवार से जुड़ा हुआ महसूस करते है।

नवीन जानकारी : विद्यार्थी मानसिक स्वास्थ्य, देखभाल से जुड़ी ऑनलाइन जानकारी पा सकते हैं। अनुभवों को ऑनलाइन साझा करने से उन्हें ऐसा महसूस हो सकता है जैसे वे उसी समूह के हैं।

क्रिएटिविटी आउटलेट : इंस्टाग्राम और टिकटॉक जैसे प्लेटफॉर्म विद्यार्थियों को अपनी प्रतिभा और विचारों को व्यक्त करने का मौका देते हैं, जिससे वे अपने बारे में अच्छा महसूस कर सकते हैं।

सोशल मीडिया के बारे में सब कुछ अच्छा नहीं है

फोमो यानि फियर ऑफ़ मिसिंग आउट (FOMO): हर किसी की मजेदार पोस्ट देखकर विद्यार्थियों को ऐसा महसूस हो सकता है कि वे कुछ चूक रहे हैं। इससे वे उपेक्षित महसूस कर सकते हैं और हर गतिविधि में शामिल न हो पाने को लेकर तनावग्रस्त हो सकते हैं।

अपने जीवन की तुलना करना : लोग आमतौर पर अपने जीवन के केवल सबसे अच्छे प्रसंग ही ऑनलाइन पोस्ट करते हैं। इसे देखकर विद्यार्थियों को ऐसा महसूस हो सकता है कि वे अच्छे नहीं हैं या उनके जीवन में अच्छा नहीं हो रहा है, जिससे उन्हें चिंता या निराशा महसूस हो सकती है।

साइबरबुलिंग : अफसोस की बात है कि कुछ लोग सोशल मीडिया का इस्तेमाल दूसरों को धमकाने एवं शोषण के लिए करते हैं। ऑनलाइन एप्स और वेबसाइट पर घटिया टिप्पणियाँ या संदेश प्राप्त करना वास्तव में विद्यार्थियों को आहत कर सकता है।

नींद की समस्या : सोशल मीडिया का बहुत अधिक उपयोग, खासकर सोने से पहले, नींद के पैटर्न को गड़बड़ा सकता है। पर्याप्त नींद न लेने से विद्यार्थी तनावग्रस्त और उदास महसूस कर सकते हैं।

लत और समय की बर्बादी : ऑनलाइन बहुत अधिक समय बिताने से विद्यार्थियों के लिए अपना समय अच्छी तरह से प्रबंधित करना कठिन हो सकता है। यह एक ऐसी आदत भी बन सकती है जिसे छोड़ना कठिन है, जिससे उनके शारीरिक, सामाजिक एवं मानसिक स्वास्थ्य प्रभावित हो सकती है।

गैर-अच्छी चीज़ों से निपटने के तरीके

डिजिटल स्वास्थ्य के बारे में जानें : विद्यार्थी सोशल मीडिया का जिम्मेदारी से उपयोग करना सीख सकते हैं और मानसिक स्वास्थ्य पर इसके प्रभावों को समझ सकते हैं।

वास्तविक जीवन में संबंध बनाएं : दोस्तों के साथ ऑफलाइन समय बिताने और स्क्रीन से दूर गतिविधियां करने से विद्यार्थियों को अधिक जुड़ाव महसूस करने और ऑनलाइन चीजों के बारे में कम तनाव महसूस करने में मदद मिल सकती है।

माइंडफुलनेस आज़माएं : माइंडफुलनेस और तनाव-राहत तकनीकें विद्यार्थियों को सोशल मीडिया के दबाव को बेहतर ढंग से संभालने और जो महत्त्वपूर्ण है उस पर ध्यान केंद्रित करने में मदद कर सकती हैं।

स्क्रीन टाइम सीमित करें : वे ऑनलाइन कितना समय बिताते हैं इसकी सीमा निर्धारित करने से विद्यार्थियों को अपने मानसिक स्वास्थ्य पर अधिक नियंत्रण मिल सकता है और वे अपने जीवन में अन्य चीजों के लिए जगह बना सकते हैं।

सोशल मीडिया में उतार-चढ़ाव आते रहते हैं, लेकिन संतुलन बनाकर और अपने मानसिक स्वास्थ्य की देखभाल करके, कॉलेज के विद्यार्थी खुश और स्वस्थ रहते हुए इसका अधिकतम लाभ उठा सकते हैं।

दिव्या कुमारी
सहायक आचार्य, कंप्यूटर विज्ञान विभाग

नारी सशक्तिकरण एक प्रयास

किसी भी राष्ट्र का आर्थिक राजनैतिक सामाजिक शैक्षणिक आध्यात्मिक व सांस्कृतिक विकास देश की मानव शक्ति पर निर्भर करता है। भारत की आधी आबादी स्त्रियों की है। भारतीय इतिहास संस्कृति में महिलाओं का विशेष स्थान है। सशक्त महिला, सशक्त भारत का जुमला आम है, किंतु वास्तविकता यह है कि भारतीय समाज में आज भी पितृसत्तात्मक समाज को प्राथमिकता प्रदान कर स्त्रियों को सामाजिक आवश्यकता अनुसार ढ़ालकर उनके जीवन को नियंत्रित किया जा रहा है। यदि स्वास्थ्य और संतुलित समाज का निर्माण करना है तो महिलाओं को सैद्धांतिक नहीं व्यावहारिक रूप से सशक्त बनाए जाने की आवश्यकता है। आज भी ग्रामीण व शहरी क्षेत्र में महिलाओं की स्थिति में असमानता की खाई मौजूद है, महिलाओं को शारीरिक व मानसिक रूप से मजबूत होकर पुरुषों की नारी को कम आंकने की सोच को बदलना होगा तभी महिलाएं अपने अधिकारों का प्रयोग कर सकेंगी।

डॉ. पूजा बागड़ी,
सहायक आचार्य, गृह विज्ञान विभाग

महिलाओं को सशक्त बनाना : नारी सशक्तिकरण का मार्ग

सामाजिक प्रगति और लैंगिक समानता की तलाश में नारी सशक्तीकरण की अवधारणा एक महत्त्वपूर्ण विचारधारा के रूप में उभरी है। यह इस विश्वास में निहित है कि महिलाओं को संसाधनों, अवसरों और निर्णय लेने की शक्ति तक समानता होनी चाहिए। नारी सशक्तीकरण का उद्देश्य उन बाधाओं को दूर करना है जो महिलाओं की उन्नति में बाधा बनती हैं और एक ऐसे वातावरण को बढ़ावा देती हैं जहाँ वे आगे बढ़ सकें।

दुनिया भर में महिलाओं को प्रणालीगत भेदभाव और उपेक्षा का सामना करना पड़ता है, जिससे उन्हें बुनियादी अधिकारों और स्वतंत्रता से वंचित होना पड़ता है। हालाँकि, जैसे-जैसे समाज लैंगिक समानता की अनिवार्यता के प्रति जागरूक हो रहा है स्थिति बदल रही है। नारी सशक्तिकरण एक सामूहिक जाग्रति का प्रतीक है जो महिलाओं के उत्थान और पितृसत्तात्मक संरचनाओं को खत्म करने के लिए ठोस उपाय करता है।

लड़कियों और महिलाओं को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान कर वे अपनी आकांक्षाओं को आगे बढ़ाने के लिए आवश्यक ज्ञान और कौशल प्राप्त करे। शिक्षा न केवल उनकी आर्थिक संभावनाओं को बढ़ाती है बल्कि आलोचनात्मक सोच को भी बढ़ावा देती है और उन्हें लैंगिक असमानता को कायम रखने वाले सामाजिक मानदंडों को चुनौती देने के लिए सशक्त बनाती है।

आर्थिक सशक्तीकरण नारी सशक्तिकरण की एक और आधारशिला है। वित्तीय संसाधनों, रोजगार के अवसरों और उद्यमिता कार्यक्रमों तक पहुंच महिलाओं को आत्मनिर्भर और आर्थिक रूप से स्वतंत्र बनने में सक्षम बनाती है। जब महिलाएं अपने वित्त पर नियंत्रण रखती हैं, तो उन्हें अपने घरों और समुदायों में स्वायत्तता और निर्णय लेने की शक्ति प्राप्त होती है।

नेहा शर्मा,
कार्यालय सहायक, प्रशासनिक विभाग

खिलाड़ियों की जिंदगी

लोग कहते हैं कि खिलाड़ी करते ही क्या है,
बस खेलते ही तो है।
खेलना क्या बाकी इतना आसान होता है
इतना बोलना बस उठना पड़ता है सुबह 3:00 बजे
जब लोगों की आधी रात होती है तब हमे बिस्तर छोड़ना पड़ता है।
बस ऐसा होता है खिलाड़ी का खेलना।

चाहे कड़ाके की ठंड हो या हो मूसलाधार बारिश
हर मौसम के अनुरूप ढालना पड़ता है।
बस ऐसा होता है खिलाड़ी का खेलना।
जब हाथ कुछ ना आता भूलकर हार का दर्द
फिर दूगनी मेहनत करने लग जाता
बस जीत हार में सिमटी जिंदगी और कुछ नहीं भाता
बस ऐसा होता है खिलाड़ी का खेलना।

अपनी मेहनत के बलबूते खिलाड़ी सम्मान पाता
अपना परचम फिर भी नहीं फहरा पाता
लोग बनाते रहते हजारों बातें
बस ऐसा होता है खिलाड़ी का खेलना।

सृष्टि असाटी
प्रभारी, खेल विभाग

आशा

न जाने तू कितने रूप बदलती
कभी वर्षा तो कभी हेमंत बन जाती
शीत से रूठकर ग्रीष्म मैं तू हमे तपाती
वसंत तो कभी शरद का आनंद दिलाती।

अब बदल गई है ये पहचान।
नारी की न साड़ी परिभाषा वाणी अब भी।
वाणी अभी भी मध्यम मधुर सी
पर कुछ कर गुज़रने की है प्रबल सी आशा।

झुकी हुई सी नज़रें।
हो चाहे वाणी मधुर सी हो,
आवाज प्रबल थी, वह तानों की
हिम्मत नहीं थी उफ करने की।

दुनिया का मंच कठिन है माना
पर इस पर डटकर बनी तुम रहना
चाहे लगे कोई राह कठिन।
नेपथ्य में न खड़ी रहना

अबला नहीं नारी हो तुम।
इस बात का अभिमान करो

देव श्री जैन,
सहायक आचार्य, भौतिक विज्ञान

सशक्त भारत की नींव शिक्षा, स्वास्थ्य एवं संस्कृति

भारत को सशक्त बनाने के लिए बहुत से पहलुओं का अपनाना एक विशेष योगदान है, जैसे शिक्षा, व्यवसाय, आधारभूत संरचना। आत्मनिर्भरता, विचारधारा, शिक्षा, स्वास्थ्य, संस्कृति इत्यादि पर इन सबसे पहले भारत देश को सशक्त बनाना होगा। मतलब आधुनिकता एवं प्राचीन गाँधी का अद्वितीय संतुलन लाना होगा। यह हम सबको पता है की हममें से अधिकतर व्यक्ति पश्चिमी संस्कृति का अनुसरण करके अपने आप को मानक समझने लगते हैं। फिर चाहे वो वस्त्रों के विषय में हो, भोजन शिक्षा के विषय में हो या फिर सुबह के गुड मॉर्निंग के द्वारा अभिवादन करने के विषय में हो। आजकल हम अपने दैनिक जीवन के वस्त्रों में अधिक चयन पश्चिमी संस्कृति के वस्त्रों का करते है, जैसे कि जीन्स टॉप, पैंट, शर्ट आदि जो की मुझे नहीं लगता कि भारतीय पहनावा है।

भारत देश में अब अंग्रेजी भाषा आम प्रचलन की भाषा बन गई है एवं हिंदी भाषा मात्र हिंदी दिवस बोली जाने वाली भाषा रह गई है। अगर यह सब कुछ ऐसा ही चलता रहा तो भाषा एवं संस्कृति में परिवर्तन दृष्टिगोचर होंगे।

आज वर्तमान समय में भारत की शिक्षा, स्वास्थ्य एवं संस्कृति की बात की जाए तो स्पष्ट परिलक्षित होता है कि प्राचीन समय में जिस प्रकार की गुरूकुल शिक्षा पद्धति थी वह बदल कर मैकाले शिक्षा पद्धति हो गई जिससे शिक्षितों की खेंप तो बढ़ गई किन्तु ज्ञानियों की कमी हो गई। शुद्ध सात्विक भोजन में विश्वास रखने वाला भारत पाश्चात्य शिक्षा पद्धति को प्राप्त कर बंद पैकेट फूड में विश्वास करने लग गया। इससे स्वास्थ्य पर असर पड़ने लगा। संस्कृति का मिश्रण प्राचीन काल से लगा कर वर्तमान काल तक अनवरत गतिशील रहा इस कारण से हमारे देश में मुगल, अंग्रेज, पुर्तगाली संस्कृति का समन्वय दृष्टिगोचर है।

रक्षिता कंवर
फिजिक्स, डेमॉन्सट्रेटर

सशक्त नारी, सशक्त भारत

वर्तमान काल में,
नारियों की उच्चता और गरिमा,
उनकी आवाजें गूँजती,
उनके सपने अंगिकारी है।
साहस से वे चलती है,
हर बाधा को तोड़ती है,
एक-दूसरे को सशक्त बनाती है,
हर अपमान को सहती है।
ज्ञान और विवेक से,
वे हर दौड़ में जीत हासिल करती है।
उनकी शक्ति संगठन में है,
उनका समर्थन दृढ़ता में है,
हर क्षेत्र में वे अपनी पहचान बनाती है,

अंकिता पारीक
सहायक आचार्य, गृह विज्ञान विभाग

नारी सशक्तिकरण
विकसित भारत का केन्द्रीय आयाम

विगत कई वर्षों से नारी सशक्तिकरण भारत के चहुँमुखी विकास के महत्त्वपूर्ण और केन्द्रीय आयाम के रूप में प्रतिबिम्बित है। वस्तुतः इस हेतु किए जा रहे प्रयासों का प्रभाव भी देशभर में स्पष्ट दिखायी दे रहा है जहाँ विकसित भारत की संकल्पना में महिलाओं के प्रत्येक क्षेत्र में योगदान को सरलता से रेखांकित किया जा सकता है। देश के सर्वोच्च संवैधानिक पद को सुशोभित करने से लेकर आम जनजीवन में नारी सशक्तिकरण की दृष्टि निःसंदेह विकसित भारत की दिशा में भूमिका को परिलक्षित करती है। राजनीतिक क्षेत्र में लोकसभा, राज्यसभा, विधानसभा के साथ स्थानीय स्वशासन में महिलाओं की गरिमामय और जिम्मेदारीपूर्ण भूमिका देश के विकास को आधार प्रदान करती है। अभी हाल ही में दिल्ली में 'सशक्त नारी-विकसित भारत' कार्यक्रम का सफल आयोजन किया गया। इस प्रकार के आयोजन यह बताते हैं कि कोई भी देश या समाज नारी शक्ति की गरिमा बढ़ाते हुए ही आगे बढ़ सकता है। इस प्रकार के आयोजन का उद्देश्य महिलाओं को आर्थिक क्षेत्र सहित सभी क्षेत्रों में सशक्तता प्रदान करने के व्यापक दृष्टिकोण को प्रस्तुत करता है। इसी पक्ष को रेखांकित करते हुए हाल ही में नई दिल्ली में आयोजित जी 20 शिखर सम्मेलन लैंगिक समानता की प्रतिबद्धताओं में से एक "औपचारिक वित्तीय प्रणाली में विशेष रूप से डिजिटल वित्त और सूक्ष्म वित्त के माध्यम से महिलाओं की भागीदारी को बढ़ावा देना, आर्थिक संसाधनों तक पहुँच को सशक्त करने" पर केंद्रित रहा। यह प्रयास महिलाओं की आर्थिक सशक्तता को सुदृढ़ता प्रदान करता है। इसी भांति अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस की वर्ष 2024 की थीम "समावेश को प्रेरित करें" रखी गयी जो यह परिलक्षित करती है कि जीवन के सभी क्षेत्रों में महिलाओं के समावेश को बढ़ावा देने की आवश्यकता है लेकिन इसके लिए सामाजिक न्याय, विकास और प्रगति, कार्यबल भागीदारी, नवाचार को बढ़ावा, बेहतर निर्णय लेना, सामाजिक-आर्थिक समानता, सामाजिक परिवर्तन, स्वास्थ्य और शैक्षिक परिणाम, शांतिपूर्ण समाज आदि आयामों पर व्यापकता से ध्यान केन्द्रित किया जाए। शिक्षा के क्षेत्र में बात की जाए तो नई शिक्षा नीति 2020 में भी लैंगिक संवेदनशीलता और संबंधित आयामों पर जनजागरूकता लाने एवं विविध कार्यक्रमों के आयोजन हेतु प्रयास किए जाने पर जोर दिया गया है।

सारांशतः बदलते दौर में लैंगिक समानता को आत्मीयता से स्वीकार करने की दिशा में भारत की प्रतिबद्धता स्पष्ट दिखायी देती है। यह बताता है कि देश के विकास में पुरूष और महिला दोनों को अपना योगदान देने के पर्याप्त अवसर मिल सके ताकि भारत की विश्व गुरू की छवि को बनाए रखा जाए और विकसित भारत की संकल्पना को साकार किया जाए।

डॉ. स्मिता पंचौली
विभागाध्यक्ष, शिक्षा विभाग

महिलाओं की समाज के विकास और प्रगति में भूमिका

जैसाकि कहा जाता है कि गुणात्मक सामाजिक परिवेश के निर्माण में पुरूष और महिला दोनों की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। भविष्य की पीढ़ी के प्रभावी समाजीकरण में भी दोनों का योगदान और प्रतिबद्धता आवश्यक है। किसी भी समाज के विकास में दो पक्ष उसकी गहनता को रेखांकित करते है। यह दो पक्ष है परम्परा और आधुनिकता। इसे कई रूपों में समझा जा सकता है। परम्परा के रूप में हमारी भूमिका समाज के चिरपरिचित प्रतिमान और मूल्यों को अगली पीढ़ी को हस्तांतरित करने की जिम्मेदारी होती है वहीं आधुनिकता के तौर पर आवश्यकतानुरूप वैश्विक स्तर पर समाजों में हो रहे बदलावों की स्वीकार करना और उनके साथ तारतम्य बनाना सम्मिलित है। इन दोनों ही पक्षों के आधारस्तम्भ के निमार्ण में पुरूष और महिला दोनों की भूमिका प्रभावपूर्ण है। भारतीय समाज की ऐतिहासिकता परम्पराओं को संजोए रखने की पक्षधर है तो वहीं दूसरी ओर बदलाव आधुनिकता को स्वीकार करने और उसके अनुसार भारतीय सामाजिक व्यवस्था और इसकी इकाईयों में परिवर्तन की आवश्यकता की भी वकालत करते हैं। इस प्रकार भारतीय समाज की सर्वांगीणता में परम्परा और आधुनिकता का एक प्रभावी संतुलन जरूरी है और इस संतुलन को बनाए रखने में पुरूष और महिला दोनों का योगदान आवश्यक है। इस प्रकार के सामाजिक संतुलन का आधार स्तम्भ लैंगिक समानता ही है। यह सामाजिक ताना-बाना लैंगिक असमानता का पक्षधर नहीं होना चाहिए। पिछले कुछ वर्षो में महिला की परिस्थिति और भूमिका में एक व्यापक बदलाव दिखायी देता है। एक समय पुरूष और स्त्री के बीच श्रम का विभाजन घर के कार्य और बाहर के कार्य के रूप में किया जाता रहा लेकिन आज के दौर में श्रम विभाजन विशेषीकरण से सम्बन्धित है जहाँ महिला भी सभी प्रकार की परिस्थिति और भूमिकाओं को निभा रही है। अधिक गहनता से बात की जाए तो महिलाओं में भूमिका द्वन्द्व की जगह भूमिका सामंजस्य और संतुलन प्रभावी है। ऐसे में यदि एक समाज लैंगिक समानता का पक्षधर है अर्थात पुरूष और स्त्री दोनों को समाज में आगे बढ़ने और अपनी भूमिका स्थापित करने का अवसर दिया जाता है तो निःसंदेह उससे समाज के विकास को सकारात्मक दिशा मिलती है। महिलाएं किसी भी समाज का महत्त्वपूर्ण आधार स्तम्भ है, ऐसे में महिलाओं की प्रगति समाज और राष्ट्र की ही प्रगति होगी। एक दूसरे को सम्मान देना और उनकी गरिमा की रक्षा करना भारतीय समाज और संस्कृति की विरासत है। इस प्रकार महिलाओं को प्रदत्त शारीरिक, मानसिक, भावात्मक और सामाजिक पक्ष को समझना और उनके अनुसार उन्हें प्रगति के पर्याप्त अवसर उपलब्ध कराना समाज को ओर अधिक सुदृढ़ता प्रदान करता है।

महिला सशक्तिकरण हेतु योजनाएं भारत की महिला राष्ट्र की प्रगति में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है और सरकार उनके योगदान और क्षमता को पहचानती है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में केंद्र सरकार ने नारी विकास पर विशेष ध्यान केंद्रित किया है। उन्हें सशक्त और स्वावलंबी बनाने के लिए बहुत सारी योजनाएं चलाई है। इन योजनाओं के कारण महिला केवल आत्मनिर्भर ही नहीं बनती बल्कि सभी क्षेत्र में अच्छी तरह से कार्य करके सफलता प्राप्त करती है। बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ योजना का शुभारंभ प्रधानमंत्री ने 22 जनवरी, 2015 को किया था। इस योजना का मुख्य उद्देश्य देश की बेटियों को उच्च शिक्षा प्रदान करना उन्हें वित्तीय रूप से स्वतंत्रता प्रदान करना है। इसके साथ-साथ इस योजना के तहत देश की बेटियों को सभी क्षेत्रों में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करना है। सुकन्या समृद्धि योजना इस योजना की शुरुआत प्रधानमंत्री मोदी ने 22 जनवरी, 2015 में की थी। इस योजना के माध्यम से ऐसे माता पिता जो अपनी बेटी को पढ़ाने के लिए और उसकी शादी के लिए पैसा इकट्ठा करना चाहते हैं, वह लाभ ले सकते हैं। इस योजना का मुख्य उद्देश्य देश के ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्रों दोनों क्षेत्रों की उन स्त्रियों को सहायता प्रदान करना है जिनकी आर्थिक स्थिति कमजोर है। समर्थ योजना केंद्र सरकार द्वारा चलाई जाने वाली इस योजना के द्वारा महिलाओं को अलग अलग प्रकार के वस्त्र निर्माण एवं उनके कार्यों के बारे में सिखाया जाता है।

डॉ. मितेश जुनेजा
विभागाध्यक्ष, समाजशास्त्र विभाग

क्लाउडिया गोल्डिन नोबेल पुरस्कार विजेता

क्लाउडिया गोल्डिन को अमेरिकी अर्थव्यवस्था में महिलाओं की भूमिका के क्षेत्र में उनके अग्रणी शोध के लिए व्यापक रूप से मान्यता प्राप्त है। अमेरिका की प्रतिष्ठित हार्वर्ड यूनिवर्सिटी (Harvard University) में इकनॉमिक्स की प्रोफेसर क्लाउडिया गोल्डिन (Claudia Goldin) को इस साल अर्थशास्त्र के नोबेल पुरस्कार के लिए चुना गया है। गोल्डिन को दुनिया की दस सबसे प्रभावशाली महिला अर्थशास्त्रियों में से एक माना जाता है। गोल्डिन तीसरी महिला थीं जिन्हें अर्थशास्त्र के लिए नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया था और वह इस पुरस्कार की एकमात्र विजेता थीं।

क्लाउडिया गोल्डिन का जन्म 1946 में न्यूयॉर्क में हुआ था। उन्होंने माइक्रोबायोलॉजी की पढ़ाई करने के लिए कॉर्नेल यूनिवर्सिटी में दाखिला लिया लेकिन इतिहास और अर्थशास्त्र की पढ़ाई की। इसके बाद उन्होंने 1972 में यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो से इंडस्ट्रियल और लेबर इकनॉमिक्स में डॉक्ट्रेट किया। 1970 के दशक में जब अमेरिका में महिला अधिकारों के लिए आंदोलन शुरू हुआ तो क्लाउडिया को अपना मकसद मिल गया। उन्होंने अमेरिका की इकनॉमी में महिलाओं की हिस्सेदारी का अध्ययन किया। वह ऐसे दौर में रह रही थीं जब देश अहम सामाजिक बदलाव के दौर से गुजर रहा था और महिलाओं की भूमिका के बारे में लोगों की सोच बदल रही थी।

महिलाओं की भागीदारी पर रिसर्च

उन्होंने अमेरिका के 200 साल के इकनॉमिक इतिहास में महिलाओं की भागीदारी का अध्ययन किया। 1990 में आई उनकी किताब Understanding the Gender Gap: An Economic History of American Women में पुरुषों और महिलाओं की सैलरी में अंतर के इतिहास के बारे में विस्तार से लिखा। 2006 में उन्होंने अपने रिसर्च पेपर The Quiet Revolution that Transformed Women's Employment, Education, and Family में अमेरिका की इकॉनमी में महिलाओं की भूमिका को चार चरणों में बांटा। उनका कहना है कि पहले तीन चरण इवोल्यूशन वाले रहे जबकि रिवोल्यूशन का दौर 1970 के दशक के अंत में शुरू हुआ। वह कहती हैं कि इवोल्यूशनरी फेज में कई बदलाव हुए लेकिन फैसले लेने में उनकी सीमित भूमिका थी। इस कारण उनके रोजगार पर प्रभाव पड़ा। लेकिन रिवोल्यूशन के दौर में महिलाओं ने अपने करियर को अपनी व्यक्तिगत पहचान के अहम हिस्से के रूप में देखा और अपनी वर्किंग लाइफ के बारे में खुद ही फैसले लिए। क्लाउडिया गोल्डिन ने अपनी रिसर्च में पाया कि गर्भनिरोधक गोलियों की उपलब्धता बढ़ने और तलाक के मामलों में बढ़ोतरी से महिलाओं में आत्मविश्वास बढ़ा। इस कारण महिलाओं को समाज में अपनी अलग पहचान बनाने के लिए प्रेरित हुई। हालांकि इस रिवोल्यूशन ने महिलाओं और पुरुषों के बीच सैलरी के अंतर को कम नहीं किया। साल 2014 में उन्होंने एक रिसर्च पेपर "A Grand Gender Convergence: Its Last Chapter" में कहा कि अमेरिका और दूसरे विकसित देशों में वर्कप्लेस पर महिलाओं और पुरुषों के बीच बराबरी सुनिश्चित करने के लिए सैलरी में अंतर को कम करना आखिरी चुनौतियों में से एक है। पुरुषों की तुलना में महिलाओं के पास काम करने का कम समय होता है क्योंकि उन्हें परिवार के लिए समय निकालना होता है। इसके लिए जॉब्स को रिस्ट्रक्चर करने की जरूरत है। टेक्नोलॉजी, साइंस और हेल्थकेयर में ऐसा हो चुका है।

गोल्डिन का शोध महिला श्रम शक्ति, आय असमानता, तकनीकी परिवर्तन, शिक्षा, और आव्रजन जैसे विषयों को शामिल करता है। उनका अधिकांश शोध अतीत और वर्तमान के संदर्भ में महिलाओं के साथ होने वाले बदलावों की जाँच करता है। उनकी हाल की पुस्तक ''कैरियर एंड फैमिली : महिलाओं की शताब्दी-इक्विटी की ओर लंबी यात्रा'' भी इसी धारा में है।

उनकी शोध के फलस्वरूप, महिलाओं ने समाज में अपनी भूमिका को स्वीकारा और समानता की दिशा में कदम बढ़ाया है। उनका काम सिर्फ अर्थव्यवस्था के क्षेत्र में ही नहीं, बल्कि समाज के बदलाव में भी महत्त्वपूर्ण योगदान देना है।

डॉ. राधा गुप्ता
सहायक आचार्य, अर्थशास्त्र विभाग

खुदा की रहमत- माँ

खुदा की रहमत होती है माँ
सरल-स्वभाव सी होती है माँ
अनजानी दुनिया में अपनी सी होती है माँ
उम्मीद सी किरण होती है माँ
सच्चे मन की होती है माँ
अपनापन का एहसास होती है माँ
आम सी ज़िंदगी में फरिश्ता होती है माँ
दुनिया के शोर में सुकून सी होती है माँ
धूप में छांव सी होती है माँ
प्रेम से परिपूर्ण होती है माँ
भगवान का दूसरा रूप होती है माँ।

ज्योति शर्मा
सहायक आचार्य, शिक्षा विभाग

गणित और नारी

दो और दो जोड़ने पर मिलता है चार,
नारी तुम रखती हो जोड़कर एक परिवार।
तीन में से तीन घटाने पर मिलता है जीरो,
परेशानियों और मुसीबतों को हराकर
तुम बन जाती हो हीरो।
दो गुणा दो होता है चार,
खुशियों को बढ़ाकर दस गुना तुम लगाती हो चाँद चार।
उनतालीस को तीन से भाग करने पर मिलते है तेरा
अंशों में बाँटकर तुम अकेली कर लेती हो हर काम पूरा।
जैसे जोड़, बाकी, गुणा और भाग होते है,
गणित के आधार,
वैसे एक नारी में छिपा परिवार के एक होने का सार।

सुगन्धा मंत्री
सहायक आचार्य, गणित, शिक्षा विभाग

महिला शक्ति और विज्ञान

महिला सशक्तिकरण के युग में अपने प्रबल आत्मविश्वास, कर्मनिष्ठा, दृढ़ संकल्प एवं तीव्र बुद्धिमता से नारी शक्ति ने विज्ञान व प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में सफलता के गगनचुम्बी आयाम प्रस्तुत किए है। वैज्ञानिक जगत में अपना लोहा मनवाकर सर्कीण मानसिकता व रूढ़िवादी तबके पर कड़ा प्रहार करने वाली देया की बेटियों की सफलता की कहानी आज आम है। कील की बेटी जानकी अम्माल ने गन्नों की हाइब्रिड प्रजाति की खोज को दुनिया में मान्यता मिली तो पुणे की आनंदबाई जोशी भारत की पहली महिला थी जिन्होंने विदेश में डॉक्टर की डिग्री हासिल की। मौसम वैज्ञानिक अन्ना मणि, जैव प्रौद्योगिकी क्षेत्र में किरण मजूमदार कैंसर, मिर्गी, मलेरिया दवा का विकास करने वाली असीमा चटर्जी पूरी दुनिया में लोहा मनवा चुकी है। हमारी महिला शक्ति ने केवल विज्ञान व चिकित्सा ही नहीं गणित अंतरिक्ष व खगोल शास्त्र में भी नाम कमाया है। मुथैया वनिता, रितु करिधल, टेसी थामस, कल्पना चावला सशक्त नारी का ही पर्याय है।

श्रद्धा राजपूत
सहायक आचार्य, रसायन एवं भौतिक विज्ञान, शिक्षा विभाग

नारी जीवन की विकास यात्रा

कालचक्र द्रुत चल रहा, क्रमिक परिवर्तन झलक रहा।
समय की इस अविरल धारा में, नारी अस्तित्व बदल रहा।।
प्राचीन काल की पुण्य धरा पर, उच्च सामाजिक स्तर पाया।
देवी सम पूजित होकर, त्रिदेवी रूप संस्कृति पर छाया।।
गौरी, दुर्गा, रणचण्डी, सावित्री रूप धर तेज झलकाया।
बौद्धिकता, आध्यात्मिकता के बल नारी गौरव कभी न डिगाया।।
समय चक्र की द्रुत गति ने, परिवर्तन शाश्वतता को बतलाया।
नारी अस्तित्व पड़ा संकट में छाई मध्ययुग की काली छाया।।
देवी स्वरूपा बन गई बोझ अब, कन्या वध संकट गहराया।
बाल विवाह, बहु विवाह सती और पर्दा जैसी, कुप्रथाओं को फैला साया।।
जीवन हुआ पशु-तुल्य अब, हाहाकार चहुँजग छाया।
निशक्त-अधिकारहीन-दयनीय रूप कभी न नारी मन को भाया।।
शिक्षा की जब अलख जगी, ब्रह्मस्त्र मानवरधिकारों का पाया।
लिंगभेद, हिंसा दुर्बलता की दूर हुई कलुषित छाया।।
हाऊसवाइफ से होम मेकर बन, खाई प्रतिष्ठा को पुनः पाया।
समय चक्र की द्रुत गति में, नारी मन अति हर्षाया।।
आधुनिक युगीन नारी ने हर क्षेत्र, स्वयं को नर से ऊँचा पाया।।

अर्चना कोठारी
सहायक आचार्य, इतिहास, शिक्षा विभाग

मुझे सशक्त बनाती मेरी माँ

कहते हैं ना कि हर कामयाब पुरुष के पीछे एक औरत का हाथ होता है वैसे ही हर कामयाब होती एक बेटी के पीछे उसकी माँ का हाथ होता है जो सपने वह जी नहीं सकती या जिन सपनों को उसने अपने बचपन में ही खो दिए उन सपनों को वह अपनी बेटी के सहारे जीती है। माँ अपनी बेटी में स्वयं की परछाई दिखती है वह यह सोचती है कि अगर मेरी बेटी कामयाब हुई तो उसकी सफलता उसके कामयाबी मेरी कामयाबी है। उसके साथ में मैं भी सफल हो रही हूँ। एक माँ ही होती है जो बेटी को उसके जन्म से ही इस समाज से अवगत करवा देती है क्योंकि वह जानती है कि यह समाज कैसा है किस जगह वह तुम्हें पीछे खींचेगा और किस जगह तुम्हारी प्रसन्नता करेगा। मैं जब कभी उधर या पीछे हटी तो मेरी माँ ने मेरी हिम्मत बढ़ाई, सिखाया मुझे की यूँ डरना नहीं है यूँ पीछे हटना नहीं है जितना तुम पीछे हटने की कोशिश करोगी तो यह समाज तुम्हें कभी आगे नहीं आने देगा तुम्हें डरना नहीं लड़ना है और अपने सपनों को साकार करना है आज जो तुम्हारे ऊपर अंगुली उठाते हैं कल वही तुम्हारी कामयाबी पर ताली भी बजाएंगे मेरी माँ ने मुझे सिखाया है कि डरने से सफलता नहीं मिलेगी लेकिन डर से लड़ने से एक दिन सफलता जरूर मिलेगी।

हंसा कंवर
बी.ए. तृतीय वर्ष

कविता

मैं सीधी चली तो बोले बनती है।
मैं टेढ़ी चली तो बोले बनती है।
मैं रूकी तो बोले हार गई।
मैं झुकी तो बोले रीढ़ नहीं है।
मैं बैठी तो बोले हिम्मत टूट गई।
मैं उठी तो बोले घमण्डी है।
मैं चुप हुई तो बोले गूँगी है।
मैं बोली तो बोले जुबान कतरनी है।
मैं मरी तो वे सब चुप हुए।

प्रियंका राठौड़
बी.ए. तृतीय वर्ष

नारी है पहचान

नारी शक्ति है, सम्मान है।
नारी गौरव है, अभिमान है।
नारी ने ही ये रचा विधान है।
नारी शक्ति को शत-शत प्रणाम है।

कभी कठोर कभी नेक हो तुम
हर रिश्ते में एक हो तुम
ममता, शक्ति और मुहब्बत
मगर अनेक हो तुम।

आन, बान और ज्ञान तुम्ही से,
संस्कारों की खान तुम्ही से
दर्द त्याग और ममता की है
संसार में पहचान तुम्ही से।

ममता को बरसाने वाली,
घर आँगन हर्षाने वाली
दुर्गा, काली रूप वाली
नारी हम सब की प्यारी

वंदना झारोटिया
बी.ए.बी.एड., प्रथम वर्ष

इस युग की नारी

मैंने पूछा इस युग की नारी से,
क्या तुम पुरूषों से आगे निकली, उसने कहा ! हाँ
पुरूषों की दी हुई हर गाली में, मैं आगे हूँ।
मैंने पूछा इस युग की नारी से,
क्या तुम्हे पुरूषों के बराबर स्वतंत्रता मिली, उसने कहा! हाँ
संविधान के पन्ने में, मैंने पूछा इस युग की नारी से,
क्या तुम सशक्त हुई, उसने कहा! हाँ

सरगम काठात
बी.ए.बी.एड. प्रथम वर्ष

सशक्त भारत में दृढ़ संकल्प के अवसर को स्वीकार करती मातृशक्ति

फ्लाइट लेफ्टिनेंट हरिता कौर देओल का जन्म 1971 में चंडीगढ़ में हुआ था। वह देश सेवा की परम्परा से जुड़े परिवार से थी। उनके पिता जो भारतीय सेना में कर्नल थे ने उनमें अनुशासन और समर्पण की मजबूत भावना पैदा की। जब 1992 में भारतीय वायुसेना ने महिला पायलटस् के लिए अपने दरवाजे खोले तो हरिता ने अटूट, दृढ़ संकल्प के साथ इस अवसर को स्वीकार किया। उनका समर्पण 1994 में एक ऐतिहासिक उपलब्धि के रूप में परिणत हुआ। 22 साल की छोटी उम्र में हरिता कौर देओल ने एरो एच.एस. 748 विमान का नियंत्रण संभाला और एकल उड़ान पूरी की जो भारतीय वायुसेना में महिलाओं के लिए एक ऐतिहासिक क्षण था।

''हरिता कौर देओल ने भारतीय सेवा में विमान में कैरियर बनाने की दिशा में भविष्य की नारी के लिए दरवाजा खोला।'' वह भारतीय वायु सेना में महिला सशक्तिकरण का प्रतीक बनी हुई है। जहाँ महिलाएं न केवल अकेले उड़ान भर सकती है बल्कि अपनी महत्त्वाकांक्षाओं के अनुसार किसी भी ऊँचाई तक पहुँच सकती है।

फ्लाईट लेफ्टिनेंट हरिता कौर देओल का नाम भारतीय विमान इतिहास में हमेशा के लिए अंकित हो गया है। वह न केवल 1993 में भारतीय वायु सेना के शॉर्ट सर्विस कमीशन (एस.एस.सी.) में शामिल होने वाली अग्रणी महिलाओं में से एक थी, बल्कि उन्होंने भारतीय वायुसेना में अकेले उड़ान भरने वाली पहली महिला पायलट बनने की उपलब्धि हासिल की। उनकी कहानी काँच की छत को तोड़ने और अनगिनत युवा महिलाओं के आसमान तक पहुँचने के सपनों को प्रज्ज्वलित करने की कहानी है।

कोमल राठौड़
बी.ए. तृतीय वर्ष

छोटी सी चिड़िया

उगते पंख उठती उमंग
लेकर उड़ चली सैर को
इस दुनिया की मंजिल बड़ी लंबी थी
दुनिया को देखने की भी अभी कमी थी।

सोचा थोड़ा रुक चलू
किसी को अपने साथ कर चलू,
इस आस में थोड़ी और आगे बढ़ चली
छोटी चिड़िया उड़ चली

यू राह भटकते रास्तों में
न जाने क्यों
एक शिकारी के साथ हो चली
अभी उसे जानना भी बाकी था
जीवन को पहचानना भी बाकी था

सफर उसका थमने का ना रहा
चलना उसका जारी ही रहा
एक बार फिर
छोटी चिड़िया उड़ चली
मैंने देखा मेरे सामने मेरी कहानी ही
खड़ी!

कंचन,
बी.ए.बी.एड. चतुर्थ वर्ष

सशक्त नारी सशक्त भारत

भारत की महिलाएं राष्ट्र की प्रगति में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। महिलाओं को सामाजिक और राजनीतिक अधिकार, न्यायिक शक्ति और सारे अधिकार जो पुरुषों को प्राप्त है वह मिलना चाहिए। हर रोज आसानी से कहीं भूमिकाओं को निभाने वाली महिलाएं निर्विवाद रूप से किसी भी समाज की रीढ़ की हड्डी होती है चिकित्सा क्षेत्र में महत्व पूर्ण भूमिका निभाती भारतीय नारी ने अपने उधर मनोबल और सेवा भाव से चिकित्सा क्षेत्र में योगदान दिया है उनकी दक्षता और निष्ठा ने लाखों लोगों को स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करने में मदद की है। वे न केवल अपने परिवार का सहारा है बल्कि विभिन्न व्यावसायिक क्षेत्र में नेतृत्व की भूमिका निभा रही है भारतीय संस्कृति में नारी को बहुत ही उत्तम स्थान प्राप्त है जबकि अन्य देशों में नारी को सिर्फ भोग और विलास की सामग्री समझा जाता है किंतु हमारे भारत देश में नारी को गौरव में कहकर सम्मानित किया जाता है। वेदों में प्रथम शिक्षा मंत्र 'मातृ देवो भवः' से प्रारंभ किया जाता है अर्थात् माता देवताओं के समान है। जीवन की कला को अपने हाथों से साकार कर नारी ने संस्कृति का रूप निखारा है। नारी का अस्तित्व ही सुंदर जीवन का आधार है।

सिद्धि सोनी
बी.ए. प्रथम वर्ष

नारी शक्ति अवार्ड से सम्मानित : रूमा देवी

हमारे देश में कई ऐसी महिलाएं हैं जिनका जीवन व उनके द्वारा किए गए काम किसी प्रेरणा से कम नहीं है। ऐसी ही एक महिला राजस्थान की पश्चिमी धरती पर जन्म लेकर संघर्षों की बेड़ियाँ तोड़ते हुए उसने एक पहचान बनाई है। इस पहचान का नाम है रूमा देवी, बाड़मेर जिले के रावतसर गांव से आती हैं रूमा देवी जब मात्र 4 वर्ष की थी तब उनके माता का देहावसान हो गया और माता की मृत्यु के पश्चात रूमा देवी ने बड़ी कठिनाइयों से आठवीं कक्षा तक शिक्षा प्राप्त की। 17 वर्ष की उम्र में रूमा देवी का विवाह हो गया विवाह के पश्चात आर्थिक स्थिति कमजोर होने के कारण रूमा देवी ने एक छोटे स्तर पर कढ़ाई-बुनाई, कसीदकारी का काम शुरू किया। धीरे-धीरे रूमा देवी ने अपने कारोबार को बढ़ाने के लिए 10-15 महिलाओं को एकत्रित करके अपने इस कार्य को बढ़ाने का साहस किया तथा बाद में रूमा देवी ने अपने इस छोटे से कढ़ाई-बुनाई के कार्य को एक उच्च स्तरीय क्षेत्र पर ले जाकर फैशन डिजाइनर के रूप में बदल दिया। रूमा देवी ने अपनी इस एनजीओ के अंतर्गत राजस्थान के पारंपरिक परिधान व हस्तशिल्प से बने वस्त्र बनाने में एक विशेष मुकाम हासिल किया। रूमा देवी के अंतर्गत 30 हजार जरूरतमंद महिलाओं को रोजगार प्राप्त हुआ। इस हेतु रूमा देवी को भारत में महिलाओं के लिए सर्वोच्च नागरिक सम्मान तथा सन 2019 में नारी शक्ति पुरस्कार मिला अब वह पूरे भारत में वर्तमान में आदिवासी कार्यक्रम और अल्पसंख्यकों के शिल्पों को बढ़ावा देने की शिक्षा में काम कर रही है। रूमा देवी जिन्होंने इतनी कठिनाईयों में अपने जीवन को आगे बढ़ाया। सर्वोच्च नारी शक्ति बनी जो हम सबके लिए प्रेरणा है।

लवली राठौड़
बी.ए. तृतीय वर्ष

अर्जुन अवार्डी दिव्यकीर्ति सिंह : सर्वप्रेरणा

नारी के बिना इस संसार की कल्पना करना भी असंभव है। यदि हम आज के समय की बात करें तो नारी अपने आप में न केवल एक शब्द बल्कि नारी अपने आप में संसार की सारी शक्तियों का एक संग्रह है। जिसके बिना संसार की सभी शक्तियां भी अधूरी है। यदि हम वर्तमान समय की बात करें तो हमारे देश की बेटी दिव्यकीर्ति सिंह जो कि मात्र 23 वर्ष की है दिव्यकीर्ति सिंह व उनके द्वारा घुड़सवारी क्षेत्र में पाई गई अपार सफलता किसी प्रेरणा से कम नहीं है। दिव्यकीर्ति सिंह जो कि एक घुड़सवार है। उन्होंने अपने नाम की तरह घुड़सवारी के क्षेत्र में एक विशेष कीर्ति प्राप्त की है। दिव्यकीर्ति ने सातवी कक्षा में ही यह तय कर लिया था कि उन्हें अपना जीवन घुड़सवारी में ही बनाना है। दिव्यकीर्ति ने चाइना में हुए एशियन गेम्स 2023 में घुड़सवारी ड्रेसेज में टीम स्पर्धा में स्वर्ण पदक जीता है। साथ ही दिव्यकीर्ति 40 साल बाद घुड़सवारी में स्वर्ण पदक जीतने वाली पहली भारतीय महिला बनी। इस हेतु दिव्यकीर्ति को अर्जुन अवार्ड से सम्मानित किया गया है। साथ ही दिव्यकीर्ति इस खेल में अर्जुन अवार्ड से सम्मानित होने वाली पहली भारतीय महिला भी बनी है। उन्होंने अपने एक इंटरव्यू में बताया कि उनकी घुड़सवारी के क्षेत्र में रुचि होने का मुख्य कारण एक घुड़सवार एवं घोड़े के बीच का रिश्ता है, जो कि एक अद्भुत रिश्ता है। दिव्यकीर्ति ने घुड़सवारी जगत में विशेष ख्याति प्राप्त कर न केवल अपने परिवार व देश को गौरवान्वित किया है बल्कि वह देश की कई ऐसी बेटियों के लिए प्रेरणा बन गई है जो घुड़सवारी या अन्य किसी क्षेत्र में अपना भविष्य बनाना चाहती है। सफलता पाने के लिए एक लंबा संघर्ष करना पड़ता है, परंतु दिव्यकीर्ति ने मात्र तीन व 4 साल की विदेश में हुई अपनी ट्रेनिंग से ही कड़ी मेहनत करके सफलता प्राप्त की है।

गायत्री राजावत,
बी.ए. तृतीय वर्ष

कौशल शिक्षा से सशक्त नारी, सशक्त भारत

महिलाएं आर्थिक रूप से स्वतंत्र हो, निर्णय लेने में सक्षम हो तभी समाज में समान अवसर प्राप्त हो सकेंगे। शिक्षा और कौशल विकास ये दो स्तंभ महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाते हैं। शिक्षा ज्ञान का दीप जलाती हैं उन्हें अपने अधिकारों के प्रति जागरूक बनाती है साथ ही आत्मविश्वास व आत्मनिर्भरता का सृजन करती है। नेल्सन मंडेला के अनुसार शिक्षा वह सबसे शक्तिशाली हथियार है जिसका उपयोग आप दुनिया को बदलने के लिए कर सकते हैं। शिक्षा और कौशल विकास एक दूसरे के पूरक हैं। शिक्षा सैद्धांतिक आधार प्रदान करती है जबकि कौशल विकास उस ज्ञान को व्यवहार में लाने का माध्यम देता है कौशल विकास महिलाओं को रोजगार के बेहतर अवसर प्राप्त करने और आर्थिक रूप से स्वतंत्र तो होने में मदद करता है। भारत के कुछ क्षेत्रों में महिलाओं की शिक्षा और कौशल विकास के कारण उनके सशक्तिकरण में उल्लेखनीय प्रगति हुई है। गुजरात में महिलाओं के लिए कौशल विकास के कार्यक्रमों के कारण हस्तशिल्प उद्योग में महिलाओं की भागीदारी बढ़ रही है जिससे उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार हो रहा है। महिला ने उद्यमिता के क्षेत्र में अपनी पहचान देश भर में बनाई है।

उदाहरण के तौर पर फागुन नायर द्वारा स्थापित नायका कंपनी देश की अर्थव्यवस्था को मजबूत करने में अपना योगदान दे रही है। कौशल विकास और शिक्षा महिलाओं को सशक्त बनाने और भारत को एक मजबूत राष्ट्र बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है। भारत की महिलाएं देश के विभिन्न क्षेत्रों में अपना योगदान दे रही है राजनैतिक और प्रशासनिक पदों पर पदस्थ हैं। परंतु भारत में आज भी कई ऐसे स्थान हैं जहाँ महिलाओं को शिक्षा प्रदान करने। सशक्त करना आवश्यक है। इन महिलाओं को शिक्षा और कौशल विकास के अवसर प्रदान करने हम एक समृद्ध और समावेशी समाज का निर्माण कर सकते हैं।

नंदिनी खंडेलवाल
बी.ए. प्रथम वर्ष

भारत उत्थान में महिलाओं का योगदान

महिला सशक्तिकरण का आशय है कि महिलाओं को सामाजिक और राजनीतिक अधिकार, वित्तीय सुरक्षा, न्यायिक शक्ति और वे सारे अधिकार प्राप्त होना जो पुरुषों को प्राप्त है। इस बात में कोई संकोच नहीं कि भारत में महिलाएं सशक्त हैं। भारत के इतिहास में या फिर वर्तमान में जब भी महिलाओं के अधिकारों का हनन हुआ है तो महिलाएं अपने अधिकारों की रक्षा के लिए आगे आयी है। प्राचीन समय से लेकर वर्तमान तक भारत को सशक्त, आत्मनिर्भर व एक विकसित देश बनाने में महिलाओं का एक महत्वपूर्ण योगदान रहा है। प्राचीन भारत में गार्गी, सीता, मैत्री, कौशल्या व द्रौपदी जैसी महिलाएं हुईं, जिन्होंने ज्ञान, विद्वता और वीरता का कार्य किया वह भारतीय संस्कृति का मान बढ़ाया। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में रानी दुर्गावती, रानी लक्ष्मीबाई और सावित्रीबाई फूले जैसी अनेक महिलाओं ने भारत को स्वतंत्रता दिलाने में वे महिलाओं की शिक्षा को बढ़ावा देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

वर्तमान आधुनिक भारत में इंदिरा गाँधी, जिन्होंने भारत की पहली प्रधानमंत्री बनकर भारतीय राजनीति में योगदान दिया। कल्पना चावला जो अंतरिक्ष में जाने वाली प्रथम भारतीय महिला थी व मैरी कॉम जिन्होंने मुक्केबाजी में पदक जीतकर भारत को सशक्त बनाने में अपना योगदान दिया। इसी प्रकार अनेक महिलाएं हैं जो प्रत्येक क्षेत्र में चाहे खेल जगत हो, व्यवसाय हो, चंद्रयान प्रक्षेपण हो या देश सेवा का कार्य हो, भारत को सशक्त बनाने का कार्य कर रही है। भारतवर्ष की सशक्त नारियां भारत को विश्व में नई ऊँचाइयों पर पहुँचाने में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दे रही है।

हंसिका चौधरी
बी.ए. प्रथम वर्ष

हम भारत की आधी जनसंख्या के निकट

स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय के राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण की नवीनतम पांचवीं रिपोर्ट के अनुसार पूरे देश में कुल जनसंख्या प्रति 1000 पुरुषों पर महिलाओं का लिंगानुपात 1020 है। भारत जैसे विशाल देश में जहाँ महिलाएं देश की जनसंख्या में लगभग आधा योगदान देती है, वहाँ महिलाओं की उपेक्षा करना, उन्हें हाशिए पर रखना देश के लिए कठिनाई हो सकती है तथा वह देश के कई मापदंडों पर अन्य देशों से पीछे रह सकती है।

महिला सशक्तीकरण का आर्थिक महिलाएं अपने निर्णयों के लिए किसी पर निर्भर न रहें। महिला सशक्तिकरण का मूल सिद्धांत है कि महिलाओं को सामाजिक और राजनीतिक अधिकार, वित्तीय सुरक्षा, न्यायिक शक्ति और वे सारे अधिकार जो पुरुषों को प्राप्त है वे मिलने चाहिए। स्त्री जन्म से ही पिता, पति व पुत्र की जिम्मेदारियों की बेड़ियों में बंद कर रह जाती है। विवाह के पहले पिता, विवाह के पश्चात् पति तथा पति के बाद वह संतान की जिम्मेदारियों में ही अपना पूरा जीवन व्यतीत कर देती है। समाज के महत्त्वपूर्ण फैसलों में महिलाओं को दरकिनार कर देना आज की समाज की पितृसत्तात्मक व्यवस्था अथवा सोच को दर्शाता है। कहीं न कहीं ये सच है कि महिलाओं ने अपनी जिम्मेदारियां निभाते हुए पुरुषों को इतनी अधिक स्वतंत्रता दे दी कि वे उन पर शासन कर सके और वर्तमान समय में जब महिलाएं इस पितृसत्तात्मक व्यवस्था से बाहर निकलना चाहती है तो यह पुरुष प्रधान समाज रोक रहा है। ऐसा नहीं है कि समाज को महिला सशक्तिकरण से कोई समस्या है, परंतु एक लंबी परंपरा को तोड़कर समाज में परिवर्तन लाना थोड़ा कठिन है। देखा जाए तो केवल भारतीय संस्कृति ही विश्व की एकमात्र संस्कृति है जो नारी को देवी के रूप में प्रतिष्ठित उसे जगतजननी का दर्जा देती है।

कुसुम लता कुमावत
बी.ए. प्रथम वर्ष

एक महिला शून्य से शिखर तक

भारत को सशक्त बनाने में आज की नारी की बड़ी भूमिका है। आज की नारी चार दीवारों से बाहर निकल कर अभाव से प्रभाव तक संघर्ष कर रही है। वह राष्ट्रपति जैसे पद को गौरवान्वित करती है। हम बात कर रहें वर्तमान भारत की राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू की जिनका जन्म 20 जून 1958 को उड़ीसा के मयुरभंज जिले के बैदापोसी गांव में हुआ। द्रौपदी मुर्मू भारत की प्रथम आदिवासी महिला राष्ट्रपति है। हालांकि प्रतिभा पाटिल पहली महिला राष्ट्रपति थी। परन्तु उन्होंने इतना संघर्ष नहीं किया। क्योंकि वह आर्थिक रूप से मजबूत थी। परन्तु एक आदिवासी महिला के संसद भवन तक सफर में बहुत संघर्ष है।

द्रौपदी मुर्मू ने अपनी स्नातक की पढ़ाई पूर्ण कर। अपने जीवन की शुरूआत एक शिक्षिका के रूप में की। इसके बाद 1980 में इनकी शादी हो गई। जिनके दो बेटे हुए थे। दोनों बेटों का स्वर्गवास हो गया और इनके पति भी पंच तत्व में विलिन हो गए।

भारत के प्रथम नागरिक बनने का सफर इतना आसान नहीं था। इन्होंने शुरूआत की पार्षद के चुनाव से जहाँ उन्हें विजय

मिली। इसके बाद 2015 से 2021 तक झारखंड की राज्यपाल रह चुकी हैं। जहाँ पर इनको राज्य की प्रथम राज्यपाल बनने का गौरव प्राप्त है। द्रौपदी मुर्मू का जीवन संघर्षों से भरा है। लेकिन वह जीवन में अनगिनत ऊँचाइयों को छू रही है और वर्तमान में भारत के राष्ट्रपति पद को सुशोभित कर रही है।

''मातृशक्ति को सशक्त करने से ही भारत पुनः विश्वगुरू बनने का अपना स्वप्न पूर्ण करेगा।''

रेन्या देवी,
बी.ए. तृतीय वर्ष

नारी शक्ति

बातें तो तुमने खूब सुनी होगी
अब एक कहानी सुनो
ऐसे वो नगमें सुनो
जिसमें भारतीय नारी हो
पाठ प्रेम जो सबको सिखाती
नवीन शक्ति जग को है दिखाती
न्याय के कटघरे में वह हमेशा रहती
कार्य ऐसा कोई नहीं जिसे नारी न करती।
नारी ने समय का प्रचंड खेल है रचाया।
झूठन के दौर को बराबर में है बदला
अबला का खिताब हैं बदला
वीरांगनाओं से सबको परिचित हैं करवाया
अब वक्त सपनों को यथार्थ का रूप देना
जिसने उँगली उठाई उससे मुड़कर जवाब देना,
समाज में व्याप्त बुराईयों को समाप्त करने का समय है।
भारत को सशक्त बनाने का समय है।
सुन लो अब धरतीवासी
इस धरती पर तुम रहते हो
वह धरती भी है एक नारी।

भूमिका अजमेरा
बी.ए. बी.एड. प्रथम वर्ष

महिला सशक्तिकरण एवं योजनाएं

भारत की महिलाएं राष्ट्र की प्रगति में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है और सरकार उनके योगदान व क्षमता को पहचानती है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में केन्द्र सरकार ने नारी विकास पर विशेष ध्यान केंद्रित किया है। सरकार ने महिला सशक्तिकरण को लेकर कई मजबूत कदम उठाए हैं। उन्हें सशक्त और स्वावलंबी बनाने के लिए बहुत सारी योजनाएं चलाई गई। इन योजनाओं के कारण महिलाएं केवल आत्मनिर्भर ही नहीं बनती बल्कि सभी क्षेत्रों में अच्छी तरह से कार्य करके सफलता प्राप्त करती हैं। ये योजनाएं निम्नलिखित हैं-

बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ योजना : इस योजना का शुभारंभ प्रधानमंत्री ने 22 जनवरी, 2015 को किया था। इस योजना का मुख्य उद्देश्य देश की बेटियों को उच्च शिक्षा प्रदान करना, उन्हें वित्तीय रूप से स्वतंत्रता प्रदान करना है। इसके साथ-साथ इस योजना के तहत देश की बेटियों को सभी क्षेत्रों में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करना है।

सुकन्या समृद्धि योजना : इस योजना की शुरूआत प्रधानमंत्री मोदी ने 22 जनवरी, 2015 में की थी। इस योजना के माध्यम से ऐसे माता-पिता जो अपनी बेटी को पढ़ाने के लिए और उसकी शादी के लिए पैसे इकट्ठा करना चाहते हैं वह लाभ ले सकते हैं। इस योजना का मुख्य उद्देश्य देश के ग्रामीण तथा शहरी दोनों क्षेत्रों की उन बेटियों को सहायता प्रदान करना है, जिनकी आर्थिक स्थिति कमजोर है।

समर्थ योजना : केन्द्र सरकार द्वारा चलाई जाने वाली इस योजना के द्वारा महिलाओं को अलग-अलग प्रकार के वस्त्र निर्माण एवं उनके कार्यों के बारे में सिखाया जाता है। इस योजना का मुख्य उद्देश्य महिलाओं को वस्त्र उद्योग में आगे बढ़ाना है।

महिला शक्ति केन्द्र योजना : यह योजना महिला व बाल विकास मंत्रालय की ओर से वर्ष 2017 को लागू की गई थी। यह महिलाओं के संरक्षण और सशक्तिकरण के लिए तैयार की गई है। इस योजना के तहत गांव-गांव की महिलाओं को सामाजिक भागीदारी के माध्यम से सशक्त बनाने और उनकी क्षमता का अनुभव कराने का काम किया जाता है।

स्टेंडअप इंडिया योजना : यह योजना 2016 में शुरू हुई थी। यह योजना आर्थिक सशक्तिकरण और रोजगार पैदा करने के लिए शुरू की गई थी। यह योजना अनुसूचित जाति, जनजाति और महिला उद्यमियों के लिए शुरू की गई ।

इनके अतिरिक्त प्रधामंत्री उज्ज्वला योजना, फ्री सिलाई मशीन योजना, प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना, मुद्रा योजना आदि कुछ मुख्य योजनाएं है जिनका उपयोग करके महिलाएं अपना भरण-पोषण करती है, अपने परिवार की आर्थिक स्थिति में सुधार लाती है तथा भारत को आगे बढ़ाने में महत्त्वपूर्ण योगदान देती है। राष्ट्र के विकास और प्रगति के लिए महिलाओं की सहायता एवं भागीदारी आवश्यक है।

जागृति जैन
बी.ए. तृतीय वर्ष

आसमां

ये आसमां छिन गया तो क्या? नया ढूंढ लेंगे,
हम वो परिंदे नहीं जो, उड़ना छोड़ देंगे।
मत पूछ, घौसले हमारे, आज कितने बिखरे हैं
एक नई शुरूआत, नया आरंभ तय है...
माना अभी हम निःशब्द है
ये पारावर छूट गया तो क्या? नया सागर ढूंढ लेंगे,
हम वो कश्तियां नहीं जो तैरना छोड़ देंगे।।
कदम चलते रहेंगे...
जब तक श्वास है, परिस्थिति से परे
स्वयं पर हमें विश्वास है,
ये मुकाम नहीं हासिल तो क्या? नये ठिकाने ढूंढ लेंगे,
हम वो शख्स नहीं जो
अपनी तलाश छोड़ देंगे।।
हम वो परिंदे नहीं जो उड़ना छोड़ देंगे।

लक्ष्मी रावत
बी.ए. प्रथम वर्ष

आज की नारी

मैं आज की नारी हूँ,
इतिहास रचने वाली हूँ
पढ़ जिसे गर्व महसूस करे,
वो इतिहास बनाने वाली हूँ
अधिकार प्राप्त करने का अवसर मिलना चाहिए।
हो गया अब अति जुल्म नारी पर अब इंसाफ की बारी है।
मैं आज की नारी हूँ,
आवाज उठाने वाली हूँ।
बहुत हो गया अब त्याग नारियों का,
अब नहीं होगा बलात्कार नारियों का,
पतन होगा अब दरिंदों और अत्याचारियों का
याद करो उस नारी को,
जो लाई थी देश में आंधी
बनी देश की महिला मुखिया पहली 'इंदिरा गाँधी'
मान बढ़ाया जिसने देश का,
देकर अपना स्वर
कहते जिनको 'स्वर कोकिला' नाम लता मंगेशकर
मैं आज की नारी हूँ,
इतिहास रचने वाली हूँ
पढ़-लिखकर हमारे समाज का नाम
उज्ज्वल करने वाली हूँ।

सिमरन बानो
बी.ए. प्रथम वर्ष

INDIAN WOMEN'S PIONEERING CONTRIBUTIONS TO SCIENCE AND TECHNOLOGY

Throughout history, Indian women have been influential in shaping the development of science and technology, both in antiquity and the present day. From the pioneers of today like Dr. Kalpana Chawla to the ancient philosophers like Gargi, their contributions have been revolutionary and groundbreaking.

In domains such as space exploration Dr. Chawla's momentous voyage on the Space Shuttle Columbia in 1997 served as a testament to the unwavering determination and aptitude of Indian women in pushing the frontiers of human inquiry. In a similar vein, Dr. Indira Hinduja's groundbreaking work in in-vitro fertilization has transformed reproductive medicine.

Indian women have also achieved enormous accomplishments in the field of technology. Computational neuroscience research by Dr. Vijayalakshmi Ravindranath has improved our knowledge of neurological conditions and opened the door to novel therapeutic and diagnostic techniques.

Notwithstanding these successes, problems like socioeconomic hurdles and gender biases still exist. Women in Science (WiS) programs and other initiatives play a critical role in empowering aspiring female scientists and bridging the gender gap in STEM areas.

In recognizing the achievements of Indian women in science and technology, we acknowledge their tenacity, intelligence, and unrelenting dedication to advancement. India can fully use its talent pool and become a global leader in scientific and technical innovation by promoting an inclusive and diverse culture.

In conclusion, Indian women have had a global influence in science and technology, which is evidence of their intelligence and determination. Let us work toward a more fair and inclusive society where everyone, regardless of gender, has an equal opportunity to contribute to the welfare and growth of human knowledge.

Iram

Assistant Professor

Physics, Department of Education

EVOLUTION OF WOMEN CHARACTERS IN ENGLISH LITERATURE

The realm of literature has been a powerful mirror reflecting societal attitudes towards gender roles. The portrayal of women characters has undergone a remarkable transformation from the 1500s to the 2000s, encapsulating the shifting dynamics of society. This journey, marked by strides and setbacks, mirrors the evolving status of women, odyssey through the centuries, exploring the representation of women in fiction and non fiction writing.

1500-1700: Renaissance and Early Modern Period

During the Renaissance, women characters were often confined to traditional roles, mirroring the societal norms of the time. Notable authors such as William Shakespeare, while presenting iconic female characters like Juliet and Ophelia, adhered to prevalent gender stereotypes.

1700-1800: Enlightenment and Romantic Period

Women characters began to occupy more complex roles, challenging societal expectations. The Romantic period, with writers like Mary Shelley exploring the complexity of femininity in "Frankenstein," laid the foundation for a more nuanced representation of women.

1800-1900: Victorian Era

The Victorian era brought forth more complex depictions of women in literature. Authors like Charlotte Brontë ("Jane Eyre") and George Eliot ("Middlemarch") presented female characters with agency, grappling with societal expectations.

1900-1950: Modernist and Post-War Period

Virginia Woolf, with "Mrs. Dalloway" and "Orlando," delved into the interior lives of her female protagonists, offering readers a nuanced understanding of their experiences. The aftermath of World War II witnessed an emergence of female writers, including Simone de Beauvoir, whose seminal work "The Second Sex" questioned the societal construction of womanhood.

1950-2000: Feminist Movement and Contemporary Literature

The feminist movement of the mid-20th century revolutionized the literary landscape. Writers like Doris Lessing ("The Golden Notebook") and Toni Morrison ("Beloved") presented strong, multidimensional women grappling with identity and autonomy.

Notable Women Writers and Their Contributions:

1. Virginia Woolf: Known for her stream-of-consciousness narrative, Woolf's works like "Mrs. Dalloway" challenged traditional literary conventions and offered profound insights into the female psyche.
2. Chimamanda Ngozi Adichie: A contemporary voice, Adichie's "Half of a Yellow Sun" and "Purple Hibiscus" explore the intersectionality of gender, race, and class, giving voice to Nigerian women.
3. Margaret Atwood: A pioneer in dystopian fiction, Atwood's "The Handmaid's Tale" and "Alias Grace" examine the societal implications of gender inequality.

Evolution of Indian Women Characters in Literature

Colonial Influence and Traditional Constraints During the 19th century, Indian literature under British colonial rule reflected the prevailing societal norms and patriarchal structures. Women characters were often depicted within traditional roles, reflecting the conservative values of the time. As we celebrate the legacy of these writers and their enduring contributions, their voices continue to resonate, inspiring future generations to explore and redefine the role of women in literature and society. Nationalism and Emerging Voices The early 20th century witnessed the Indian independence movement, which influenced literary discourse. Women characters began to emerge with more agency and complexity, reflecting the changing social and political landscape of India. While male authors dominated the literary scene, some notable Indian women writers emerged, albeit in limited numbers.

1. **Sarojini Naidu (1879-1949):** Often referred to as the "Nightingale of India," Sarojini Naidu was a prominent poet and political activist. Her poetry collection "The Golden Threshold" (1905) addressed themes of patriotism, freedom, and the role of women in society.
2. **Ismat Chughtai (1915-1991):** A fearless writer, Ismat Chughtai challenged societal taboos and patriarchal norms through her short stories and novels. Her work "Lihaaf" ("The Quilt") sparked controversy for its exploration of female desire and sexuality in conservative Indian society.
3. **Mahasweta Devi (1926-2016):** Mahasweta Devi was a prolific Bengali writer and social activist whose works shed light on the struggles of marginalized communities, particularly women. Her novel "Hajar Churashir Ma" ("Mother of 1084") delves into the complexities of motherhood and political activism.
4. **Arundhati Roy (1961-):** Arundhati Roy's debut novel "The God of Small Things" (1997) captured global attention and won the prestigious Booker Prize. Through her intricate narrative, Roy explored themes of caste, gender, and social inequality in post-colonial India.
5. **Anita Desai (1937-):** Anita Desai's novels such as "Clear Light of Day" (1980) and "Fire on the Mountain" (1977) offer poignant reflections on the lives of Indian women, navigating familial bonds, cultural traditions, and personal aspirations.
6. **Jhumpa Lahiri (1967-):** Jhumpa Lahiri's debut collection of short stories, "Interpreter of Maladies" (1999), won the Pulitzer Prize. Her narratives intricately explore the complexities of Indian-American immigrant experiences, including the roles and struggles of women in these contexts.

It is a privilege to discover that delving into this literary gallery is not just a fleeting glance; rather, it is an exploration that knows no bounds.

In the vast expanse of literature, liberation reigns supreme, allowing the mind to soar freely atop the wings of imagination. Within this boundless realm, women stand empowered celebrated for the grace inherent in their tenderness.

"In dignity's wealth, a woman stands,
Yet carelessly burdened in nurturing hands.
Duty aligns with responsibility's weight,
Yet hollowness in her heart may create.
A woman, multifaceted, daughter and wife,
From grand to grand, the journey of life.
A girl within, though grown and grand,
Whispers beneath a societal command.
Unfolding childhood's delicate grace,
Entering the world, a rulers' embrace.
Choosing from many, chosen by another,
Nodding to all, demands do smother.
Compromising, accepting, she persists,
Handling, resisting, in roles she exists.
Not just a woman, but a girl remains,
Fighting for her image, breaking chains.
A change, a chirping, a roaring sound,
Spring arrives with buds on life's ground.
New green leaves, boughs of flowers bloom,
An era, a legacy, dispelling gloom.
Not just a woman, but an era's birth,
Unfolding the past, welcoming worth.
The century's tale, a poetic thread,
A woman's journey, where the legacy is spread."

Ms. Kavita Priyadrshni ,
Assistant Professor,
Department of English

चित्र आरेख

प्रियंका कुमावत
सहायक आचार्य,
वाणिज्य विभाग

आलेख की मौलिकता का सम्पूर्ण दायित्व लेखकों का ही है-सम्पादक

KNOWLEDGE IS POWER

श्री रतनलाल कंवरलाल पाटनी गर्ल्स कॉलेज

(P.G. College Affiliated to MDSU Ajmer)

अजमेर रोड़, किशनगढ़, अजमेर (राजस्थान) 305801

दूरभाष : 01463-257000, ई-मेल : info@rkgirlscollege.edu.in

वेबसाइट : www.rkgirlscollege.edu.in